बुज़र्गदेवता



मोहन किष्ण रैणा

बुज़ुर्ग देवता

(संतश्री शंकर राज़दान)

मोहन किषण रैणा

1— दानावारी, छत्ता बल
श्रीनगर—190010

मेरे बुज़ुर्ग देवता को मेरा

प्रणाम

—रैणा



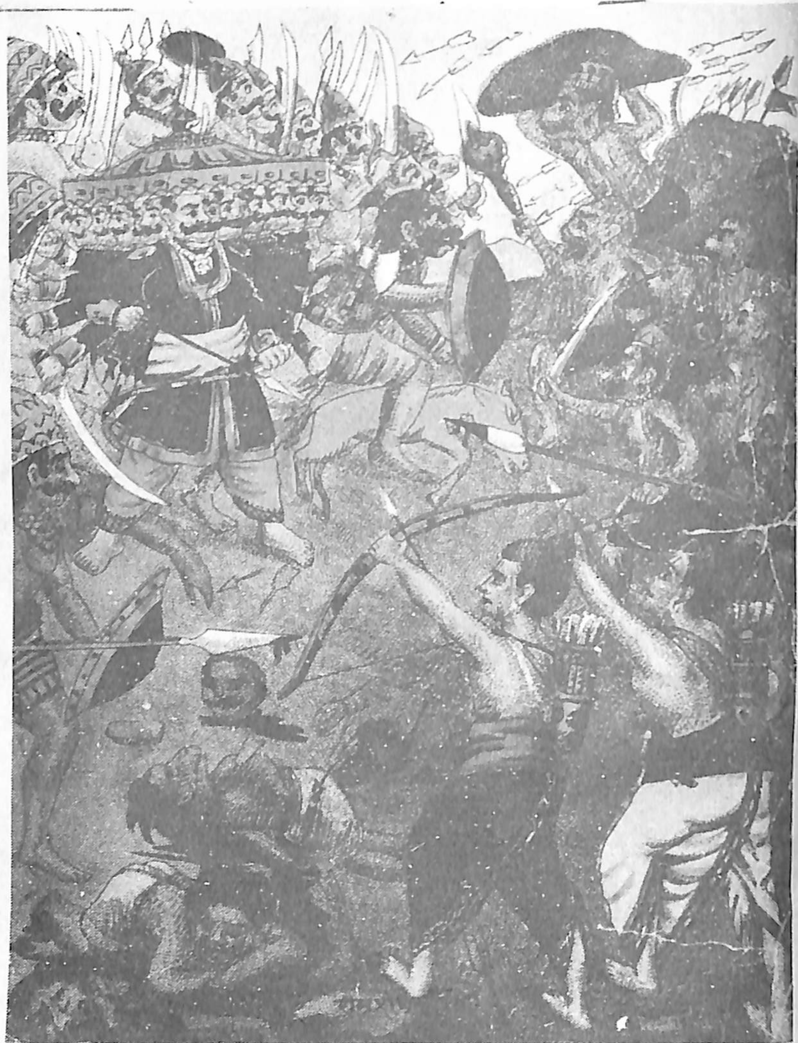
संत श्री शंकर राज़दान
1886 - 1931 विक्रमी



श्री रामज़ साहिब
राज़दान



Maharaja Ranbir Singh





पुस्तक का नाम :—

तरतीबकार :— मोहन किष्ण रैणा

प्रकाशन :—

संख्या :— एक हज़ार

"शुद्ध कशमीरी लिपि, किताबत — श्री पृथ्वीनाथ कौल "सायिल"

प्रिंटिंग प्रेस :— ख्वाजा प्रेस, दिल्ली

मूल्य :— 30=00



Dr. Karan Singh



प्राक्कथन

कश्मीर की उर्वरा भूमि सदैव से संतों मनीषियों और कवियों की जन्मदात्री रही है जिसमें अभिनवगुप्त, क्षमेन्द्र, कल्हण आदि अनेक विभूतियाँ उत्पन्न हुई हैं। इसी परंपरा में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में श्रीनगर में एक संत हुए हैं संत श्री शंकरजुव राजदान। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें उनके द्वारा रचित "शंकर रामायण" बहुत प्रसिद्ध है। संत श्री शंकर के जीवन और कृतित्व के संबंध में प्रामाणिक रूप से किसी भी ग्रंथ में क्रमबद्ध उल्लेख नहीं मिलता, यद्यपि उनके चामत्कारिक जीवन के संबंध में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री मोहन कृष्ण रैना ने बड़े परिश्रम से संत श्री शंकर के जीवन के अनेक रोचक और प्रेरणादायक तथ्यों को संकलित किया है, जिससे उनका व्यक्तित्व पाठक के सामने उभर आता है। पुस्तक में स्वामी जी द्वारा रचित अनेक स्तुतियों, भक्तिपूर्ण रचनाओं और लीलाओं को भी संग्रहीत किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक कश्मीरी भाषा भाषियों के लिये उपयोगी और रोचक सिद्ध होगी।

कर्णसिंह

(डा० कर्ण सिंह)

वसंत पंचमी

9 फरवरी 1992

3 NYAYA MARG, CHANAKYAPURI, NEW DELHI-110021 INDIA
TEL : (011) 3011744 FAX : (9111) 343703 TELEX : 031-61635 TBC IN

डा० कर्ण सिंह

मैं माननीय डा० कर्ण सिंह जी का अत्यन्त आभारी हूँ कि आपने इस पुस्तक का प्राक कथन लिखकर संतों के प्रति अपनी श्रद्धा का प्रमाण दिया है। धन्यवाद।

—— रैणा

चित्र पत्र-1
(Plate No. 1,)

(From Left to right)

	1st. Circle		II. Circle	
	1	2	1	2
1st. Line	शिव	पार्वती	ब्रह्मा	नारद
II. Line	अगस्त्य	याज्ञवल्क्य	काकभुषण्ड:	गरुड:
III. Line	वाल्मीकी	भरद्वाज:	वसिष्ठ:	श्रीराम:
IV. Line	गणेश	सरस्वती		

चित्रपत्र Plate No. (2,)

1st. Line

अगस्त्य: शिव: सती

II. Line

सती शिव श्रीराम सती

III. Line

सती शिव सती

IV. Line

पार्वती शिव शिव सती
(देहत्याग)

चित्र पत्र (3)
(Plate No. (3))

1. परमेश्वर
2. पार्वती
3. अम्मरीश की नवजात कन्या (मोह्नि‍नी)
4. अम्भरीश पत्नी
5. मृत्तेश्वर
6. अम्भरेश
7. नारद
8. अम्भरेश with crown
9. नारद stand
10. अम्भरेश [illegible]

चित्र पत्र Plate No (4)

राम अम्भरेश और सती का विवाह

चित्र पत्र (Plate No.) (5)

पार्वती का शिव से विनयपूर्वक पूछना कि राम जी किस लिए संसार में आए। शिव जी उत्तर देते हैं कि एक दशरावण संसार में था उसने विदुर जी वर पाया। पवनाहार किया और त्रिजगत को पीडित किया। पृथ्वी धेनु के रूप में इन्द्र के शरण गई। रोते रोते दोनों विदुर से कहते हैं कि आपके वरदान से हम

संकट में फंस गए। वे ब्रह्मा जी के पास गए। फिर सारे क्षीर सागर में श्रीधर की शरण में गए। विदुर को तेजरूप के दर्शन मिले। ब्रह्माजी भी प्रार्थना करता है। रावण बल पकड़ता है और हम सबों को कष्ट में डालता है। भगवान ने कहा- कश्यप ऋषि ने घोर तपस्या की। उसने मुझे संतान के रूप में मांगा। अदिति कौशल्या के रूप में आई। दशरथ अजराज से उत्पन्न हुआ। विभाण्डक नाम के राजऋषि से एक मृगिनी से ऋषि शृंगा का जन्म हुआ, उसी से हवन रचाया गया। और राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न का उत्पत्ति हुई।



चित्र पत्र (Plate No. 6)

कौशल्या तथा रानियाँ इत्यादि।

ऊपर :— रानियाँ = कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा और उनकी सखियाँ।

आप से !

मैं स्वामी शंकर राज़दान के स्वर्ण वाक्यों का गुलदसता तथा उनकी जीवनी संक्षिप्त रूप में आपकी सेवा में पुस्तक के रूप में पेश कर रहा हूँ, जो आज से कम से कम एकसो पचीस वर्ष पूर्व लिखे गए हैं। यद्यपि मेरी यह तीव्र इच्छा थी कि ये वाक्य एक पुस्तक के रूप में आज से कई वर्ष पहले प्रकाशित किये जाएं, परन्तु इस कार्य में एक बाधा तथा कठिनाई आड़े आती थी कि ये वाक्य जो संत जी ने कहे हैं वे उस समय की लिपि में लिखे हुए हैं जो प्रचलित बोल चाल तथा लिपि से बहुत ही भिन्न हैं।

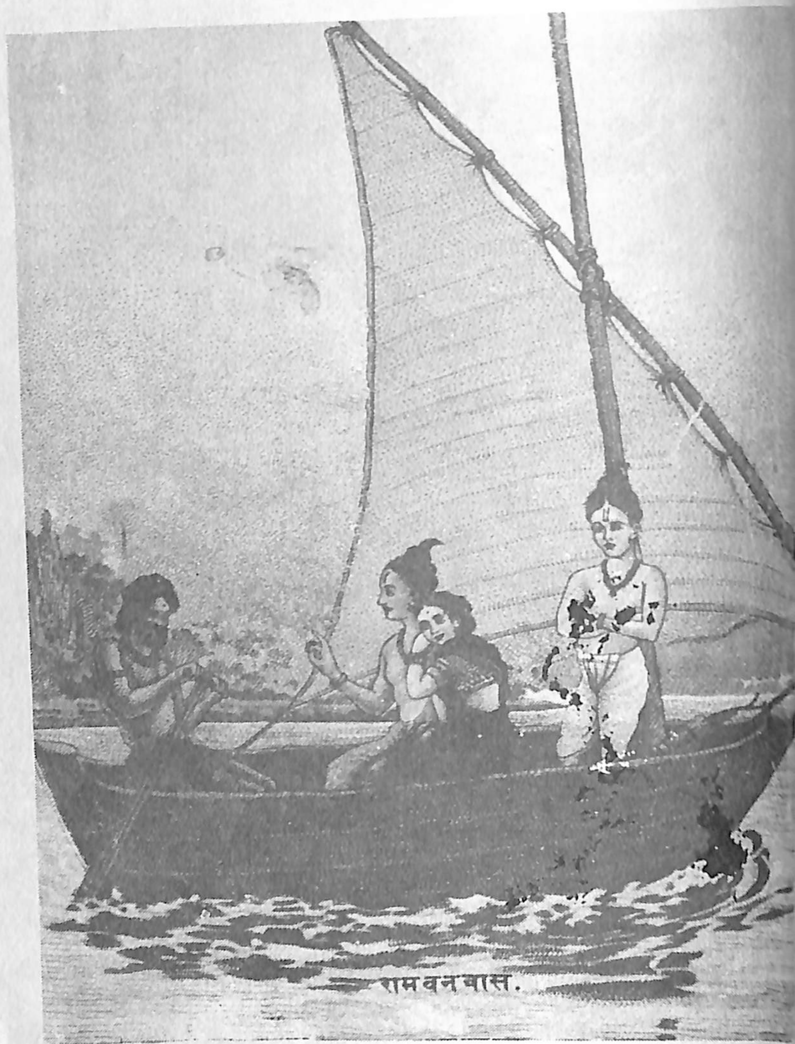
अतः इन वाक्यों को शुद्ध तथा पढ़ने योग्य लिपि में लिखने की इस कठिनाई को दूर करने के लिए मुझे कशमीरी भाषा से सम्बन्धित मौजूदा विद्वानों लेखकों से मशवरा लेना पड़ा, जैसे प्रो० 'पुष्प', डा० चमन लाल रैणा, श्री मोती लाल 'साकी' इत्यादि। परन्तु फिर भी आज तक इन वाक्यों को पुस्तक के रूप में पेश नहीं कर सका, जबकि आज मेरी यह चिर-कालीन इच्छा श्री पृथ्वीनाथ कौल "सायिल काशमीरी" शालाकदल श्रीनगर ने पूर्ण की। उन्होंने इन वाक्यों की किताबत की तथा प्रचलित लिपि में लिखने का कार्यभार अपने कन्धों पर ले लिया, हिन्दी में इसका अनुवाद तथा देवनागरी में इसका लिपिअंतरण भी श्री "सायिल" ने ही कर लिया

और उनके सहयोग से ही यह गुलदस्ता आज आपके सामने पेश कर सका हूँ। "सायिल जी" कुहना मश्क़ अंदीब तथा कवि हैं। मैं उनका बहुत ही आभारी हूँ। मेरा इरादा है कि मैं आगे स्वामी जी का लिखा हुआ रामायण भी श्री "सायिल" के सहयोग से पुस्तक के रूप में पेश करने की कोशिश करूँगा। इसमें आप सब की सराहना तथा ज़िंदगानी शर्त है।

——— रैणा



चित्र पत्र (1)


रामवनवास.

मेरे बुज़ुर्ग देवता

काशमीर के इतिहास और नीलमत पुराण, में लिखा है कि काशमीर भूमि एक समय एक जल सरोवर था जिसका नाम "सतीसर" था। उन दिनों आस पास के थल पर नाग और प्रस्चय जाति के लोग आबाद थे जो हिन्दु ज़ाति से सम्बंध रखते थे। नीलनाग राजा था जो कश्यप ऋषि का बेटा था और राजधानी का नाम भी नील नाग ही था। जिसको आज कल वेरी नाग कहा जाता है। यह पीर पंचाल के दामन में अबके एक सुन्दर चश्मा और देखने योग्य हिन्दुओं का एक पवित्र स्थान है। इस चश्मेके

पानी नीलगों है तथा साफ़ व स्वच्छ भी। इस चश्मे से थोड़ी दूरी पर "व्यथवोतुर नाम का एक और चश्मा है। यही चश्मा वास्तव में 'वितस्ता' का असली स्रोत है। परन्तु आम लोग वेरी नाग को वितस्ता नदी का स्रोत मानते हैं। यह चश्मा कश्मीर के लोगों का अन्नदाता है। जहांगीर बादशाह ने 1613 ई० में बागात और अयवानात बनवाये हैं। जहांगीर और नूरजहाँ की अथाह प्रेम ऐसे ही चन्द अयवानात और बागात से अब तक क़ायिम है।

कश्यप ऋषि के पिता की सिद्धि से सतीसर का पानी भूकम्प के कारण सुराख बनाकर बहकर निकल गया और इसी प्रकार सतीसर खुश्क होगया।

इसी सतीसर का नाम कशमीर भूमि है। जो कश्यप ऋषि के नाम से सम्बन्धित है। जो कशमीर आजकल सब्ज़ा व गुल से लदे हुए पहाड़ों की चार दीवारी में पिन्हाँ है। शीतल तथा मीठे पानी की नदियों को देखकर प्रसिद्ध कविवर श्री चकबस्त ने क्या खूब कहा है :—

"ज़र्रा ज़र्रा है मेरे कशमीर का
मेहमान नवाज़।
राह में पत्थर के टुकड़ों ने
दिया पानी मुझे।"

बहार आरा ज़मरुदपोश कोहसार, सफ़ेद पगड़ी बान्धे हुए, आसमान से बातें करने वाले फ़लकबोस और ऊँचे ऊँचे देव पैकर पहाड़, जगह जगह पर चांदी के साफ़ व शफ़ाफ़ दरिया और नाले,

शमशाद व देवदार के पुरफ़िज़ा घने जंगल, लहलहाते हुए खेत, स्वर्ग से भी सुन्दर। इसी सुन्दरता को देखकर "हफ़ीज़ जालंधरी ने कितना सुन्दर कहा है :——

"आमियों ने कह दिया कशमीर को
जन्नत निशां।
वर्णा जन्नत में हुसनो रंग व
शादाबी कहाँ॥"

इसी पवित्र भूमि ने कई अवतार, महात्मा, आदर्श देवता, संत और फ़कीर पैदा किये हैं और यह सिलसिला जारी है। इतना ही नहीं अपितु यह काशमीर भूमि शिव शंकर, श्री राम चन्द्र जी, श्री कृष्ण महाराज, महात्मा बुद्ध, गुरु नानक और हज़रते

सुलेमान का मसकन रहा है। इसी कशमीर भूमि ने अभिनव गुप्त, उत्पल देव, क्षेमेन्द्र, कल्हण पंड़ित, ममट-आचार्य, ललेश्वरी, नुन्द ऋषि, रूप-भवाणी, मिर्ज़ा काक, परमानन्द, कृष्ण जुव राज़धान, ऋषि पीर, 'मनसा राज़-दान' तथा 'रज़ दद' उत्पन्न किये हैं। इसी कशमीर भूमि ने संत श्री शंकर जुव राज़दान को भी जन्म दिया है। इनकी असली जन्मभूमि कन्याकदल श्रीनगर में उनीसवीं शताब्दी के मध्य में एक सामान्य पंड़ित घराने इनका जन्म हुआ है। माता पिता का नाम ज्ञात नहीं। साथ ही इनकी जन्म तिथि का भी पता नहीं चल सका। परन्तु उनके लिखे पवित्र ग्रन्थों से ऐसा ज्ञात

होता है कि उनका जन्म 1886 विक्रमी में हुआ है और उनके अमर होने का समय 1931 विक्रमी है। परन्तु अभी तक इस बारे में पूर्ण रूप से जानकारी नहीं हो सकी है। हाँ नाम तो निःसन्देह शंकर राज़दान ही है। क्योंकि उन्होंने अपने प्रत्येक वाक्य में मक़ता के स्थान पर 'शंकर' का नाम ही प्रयोग किया है। जैसा कि रामायण लिखने के आरम्भ में आपने कहा है:-

ॐ शुकलम् गौडु शंकर् करो
गणेश्वरो नमस्कार

इसी प्रकार रामायण के अन्त पर यूं कहा है :—

शंकरन कष्ट् द्रोमायन गोतरन तय।
वोंनय नय राम लोल् रामायण ॥

पहली पंक्ति से यह साफ़ ज़ाहिर होता

कि नाम शंकर है जैसा कि उन्होंने ॐ शब्द का नाम लेकर अपने आप से कहा है कि ऐ शंकर! रामायण लिखना आरम्भ करने से पहले महा गणेश को प्रणाम कर। इसी प्रकार दूसरी पंक्ति में साफ़ प्रत्यक्ष है जो कि "शंकर रामायण" की अन्तिम पंक्ति है। कहा है ——

"शंकरन कष्टदोमायनगोत्तरन तय"

कष्ट दोमायन राज़दान साहब का गोत्र है। जिससे मालूम होता है कि उनकी जाति राज़दान ही है और यह ज़ात ऊँचे कुल के राज़दानों की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने जितने वाक्य और लीलाएं कही हैं, उनमें शंकर का नाम अवश्य मिलता है।

बचपन से ही उनके विचार शुद्ध

तथा नेक थे। तोतेली ज़ुबान में ही भगवत् भजन में मस्त मगन रहते थे। सदा भगवत् प्रेम में लीन रहते थे। छोटी आयु में ही उनको वाक्य सिद्धि थी। अर्थात जो बात अपने मुख से निकालते थे वह सत्य सिद्ध होती थी। प्रारम्भिक आयुअवस्था में ही वे घर से निकल पड़े थे जबकि उनकी आयु पंद्रह वर्ष से अधिक न होगी। उनके पिता जी उस समय कुलगाम कश्मीर में महकमा माल के कर्मचारी थे। तो स्वामी जी उनके पास कुलगाम में ही रहते थे। इससे पहले स्वामी जी ने नाना प्रकार के चमत्कार दिखाए हैं। करामातें की हैं। जिनको सुनकर लोगों को केवल आश्चर्य ही

नहीं होता था अपितु अभी से ही उनके ह्री भगवत प्रेम में लीन होजाते थे। चूंकि उनके पिता जी की कुलगाम में नौकरी थी। इसी कारण स्वामी जी ने अपनी तपस्या का अधिकाधिक समय इसी प्रांत के स्थानों में बिताया है। सब से पूर्व उमा देवी के पवित्र अस्थापन में अपनी तपस्या का शुभारम्भ किया है। यह देवी स्थान श्रीनगर से 72 किलो मीटर उत्तरसू ब्रारी आंगन के निकट अच्छा बल में एक छोटी और अछूती पहाडी पर आज भी मौजूद है। स्वामी जी इस स्थान पर पांच साल तपस्या करते रहे। इसके पश्चात खीर भवाणी मंज़ गाम ग्राम में जो इलाका कुलगाम से कई मीलों के फ़ासले पर जंगल के

बीचों बीच एक पवित्र स्थान है। जहां पर माता खीर भवाणी जी का अस्थापन और एक पवित्र चश्मा भी है। कहते हैं माता खीर भवाणी का निवास स्थान पहले पहल वहाँ ही पर था और बाद में माता तुला मुला आईं।

एक दिन जब स्वामी जी इस पवित्र स्थान की ओर प्रस्थान कर गए तो आकाश पर बादल छा जाने लगे। घनघोर घटायें प्रति ओर दिखाई देने लगीं। बिजलियाँ चमकने लगीं ऐसी वर्षा होने लगी कि थमने का नाम तक नहीं लेती। आंधियाँ मचलने लगीं। तूफ़ान बढ़ता गया। नदी नालों में पानी ऊपर ही ऊपर चढ़ता गया, परन्तु इस सब के होते हुए भी स्वामी जी भगवत प्रेम में मस्त मगन होकर

आगे ही आगे चलते रहे। एकाएक विषव नदी में भाड़ आगई। यह नदी कौसर नाग से आती है। रास्ते में इसके साथ अगणित नाले तथा भरने आ मिलते हैं। यह नदी कुलगाम से गुज़रता है। स्वामी जी का चरण कमल पानी के तेज़ बहाव के कारण फिसल गया और नदी में गिर कर बहने लगे। नदी में पानी बड़े ज़ोर का था। जड़ से उखड़े हुए पेड़ तथा वृक्ष बड़ी संख्या में बह रहे थे। बड़े बड़े पुल और पत्थर भी बह रहे थे। बड़े पत्थर छोटे छोटे पत्थरों को चकना चूर करते जाते थे। परन्तु स्वामीजी का साहस फिर भी न छूटा और ना ही घबराए। वे बहते बहते यह सारा ही देखते थे। इसी बीच स्वामीजी ने

एक आवाज़ सुनी। बड़े प्रयत्न से नीचे की ओर मुड़ कर देखा कि एक देवी एक बड़ी चट्टान पर खड़ी अपनी साढ़ी सा वस्त्र का एक सिरा पकड़े हुए महात्मा की ओर फेंक कर उसको अपने पास खींच लिया और अपने कर कमल से स्वामी जी के मस्तक पर तिलक लगा-यां। फिर कुछ खीर प्रशाद खिलाया और साथ ही कहा — "तुम यहाँ क्यों आए? तुम्हें यहाँ आने से कोई लाभ नहीं होगा। यह जो कुछ तुम देख रहे हो यह सब तुम्हारे यहाँ आने के कारण ही हुआ है। इसलिए तुम यहाँ से चले जाओ। मैं ने तमको स्वामी ज़नार्दन दर अलमारूफ़ (ज़नुकाक) के हवाले किया है। वही तुम्हारा कल्याण करेंगे और उन्हीं से उपदेश प्राप्त

करना।" इनही शब्दों के साथ माता अन्तरध्यान हो गईं। स्वामी जी अपने आप किनारे पर आ गए। इतनी देर में अकस्मात आकाश पर सूर्य देवता ने उदय किया। तूफ़ान थम गया। विषव नदी में पानी कम होता गया। अब स्वामी जी मंज़ गाम के बदले सीधे श्रीनगर की ओर चल पड़े। ये देवी कौन थीं? इस प्रश्न के उत्तर में कहा जाता है कि जब स्वामी जी खीर भवाणी माता के दरबार में जाने का निश्चय कर गए थे तो इन की दृढ़ता को देखकर माता खीर भवाणी जी ने उनको अपनी शरण में ले लिया जिस से स्वामी जी का कल्याण हुआ। यह भी कहा जा रहा है कि खीर का प्रशाद खिलाने और स्वामी ज़न् काक के पास

भेजने का मतलब उन माता देवी का माता रूपा भवाणी (अलक साहिबा) का होना भी समझा जासकता है। क्योंकि स्वामी ज़नार्दन दर उनके ही वंश से थे। परन्तु इन माता का खीर भवाणी होने का स्वामी जी की ही एक लीला में प्रमाण मिलता है। जैसा कि वे स्वयं कहते हैं :—

सुमन् लीला करहां चांनी,
सांन्य भवांणी जय जयकार॥

गरि नेर् ह्यथ दोद् बानै,
ज़ाल् मोख् तीज़स करय जयकार।
च्युय छ्वख समसार् सर् तारांनी॥
सांन्य भवांणी जय जय कार॥॥

तुल् मुलि सिखिम छ्वख आसुवांनी,
रांझ्ांय समयिच रक्षाकार।
राजा राज़न राज़् दिवांनी॥
सांन्य भवांणी जय जयकार॥॥

इसी तरह एक और पंक्ति में कहा है:-

हावतम दर्शुन ह्युख प्रज़लवांनी,
असुरन कोंरुथ ना त्रेंय समहार।
काशमीर मंड़लस ह्युय दयाचांनी,
ज़ल हो खुस राक्षस कोंरुथ समहार॥
सांन्य भवांणी जयजय कार॥०॥

इन श्लोकों से साफ़ स्पष्ट होता है कि वह माता खीर भवाणी ही थीं,जिन्हों ने अपने शुभ दर्शन से स्वामी जी का कल्याण किया था। स्वामी ज़नार्दन दर जिनके पास माता खीर भवाणी ने स्वामी जी को भेजा था। वे एक सिद्ध पुरुष तथा संत थे जो सफ़ाकदल श्रीनगर के प्रसिद्ध दर खांदान से सम्बन्धित थे। स्वामी जी ने अपनी रची गई लीलाओं में कई बार अपने गुरु स्वामी ज़नार्दन के

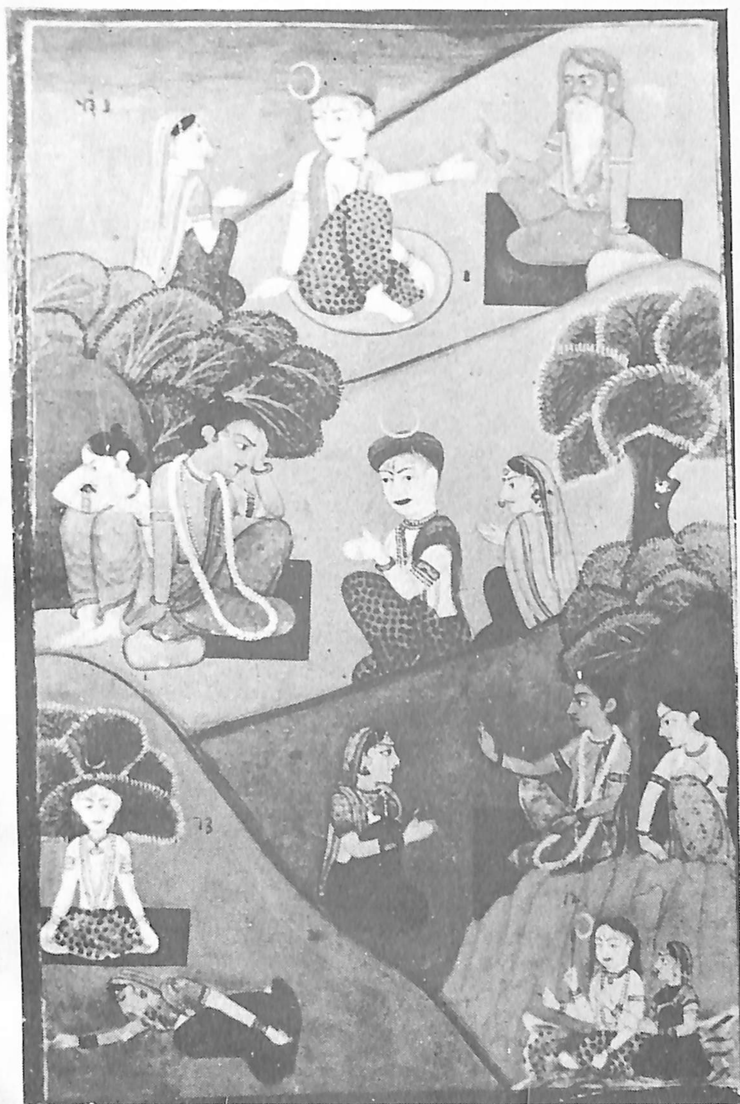
विषय में लिखा है। जिस से इन घटनाओं की पुष्टी होती है और साक्षी मिलती है।

(१) ज़नार्दन् न्यरमल् परमीश्वरो,
गुरु वाक्य चानि सांत्य चलि
अंधकार,

(२) ज़नार्दन पानय छुय ईशारो,
गुर छुय कासान मनि गचर।
गुर छुय आसवुन वति रहबरो॥
गुर ईशारो दया कर ॥०॥

(३) बोज़ निशि ज़ोनुम छांड़हन गुरो,
दियम सुय पद कास्यम अन्यर।
छांड़िथ दितम ज़नार्दन गुरो॥
गुर ईशारो दया कर ॥०॥

स्वामी जी जब श्रीनगर पहुंचे तो स्वयं स्वामी ज़नार्दन दर उन से मिलने



चित्र पत्र (५)



चित्र पत्र (3)

के लिए पहले ही सफ़ाकदल पुल पर आ पहुंचे थे। इस प्रकार स्वामी जी देवी माता की कृपा से ढूंढ़ने तथा बिना तलाश के और बिना जान पहचान व परिचय के एक दूसरे से मिले और स्वामी जी कई वर्ष अपने गुरु के पास रहे तथा उनसे ही पूर्ण उपदेश प्राप्त किया। स्वामी ज़नुकाक ने उन से वह शक्ति वापिस ली थी। उनको शांत तथा पूर्ण रूप से संत होने का उपदेश दिया। क्योंकि स्वामी जी ने बालक अवस्था ही में इतने बड़े आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाए जिन को देखकर चकित रह जाते हैं। एक दिन की बात है। घटना इस प्रकार हुई कि स्वामी जी अपने बचपन में अपने सहपाठियों के साथ पढ़ाई कर

रहे थे। उन दिनों कशमीर में बिजली नहीं थी। लोग मट्टी के दिये जलाते थे। पढ़ते पढ़ते जब देर होगई। दिये में तेल भी खत्म होगया। स्वामी जी के संगी सह-पाठी तो व्याकुल होगए। रात के अंध-कार में बाज़ार से तेल मिलना असम्भव था। ज्यूंही दिया बुझने लगा तो सभी बच्चे चिन्तित हो गए परन्तु स्वामी जी टस से मस न हुए। केवल दिये की ओर देखा। क्या हुआ कि दिया बुझने से पहले का सा प्रकाश देता रहा। बुझ ही नहीं गया और इसबार आवश्यकता से भी अधिक समय तक जलता ही रहा और उस दिन से बराबर जलता ही रहा। इसी इसी प्रकार स्वामी जी के बचपन की कई घटनाएं हैं जो प्रसिद्ध घटनाएं थीं। यदि केवल इनके बचपन के ही

चमत्कारों पर लिखा जाए शायद दीर्घ आयु की आवश्यकता पड़े। यही कारण था कि माता खीर भवाणी जी ने उनको स्वामी ज़नार्दन दर को सौंप दिया ताकि वे उनसे शांत रहने का उपदेश प्राप्त कर सकें। जिस से उनका कल्यान हो। जैसा कि वे अपनी गुरु लीला में कहते हैं:—

गुरु मुखु कासतम गटु गाशरो
बासतम गुरु पदुक अन्तर।

ज़नार्दन छुय पानय,
अज्ञान कासानय।
ती छुम बासानय॥
करयो हरु हरय॥०॥

ज़नार्दनु कर म्य दया,
अमृतु गनु मया।
शंकरस चांन्य दया॥
करयो हरु हरय॥०॥

स्वामी जी ने अपने चमत्कारों की शक्ति लौटाने के पश्चात अपने गुरुदेव की ठीक आज्ञानुसार बारह[12] वर्ष तोस् मांदान में तपस्या की। तोस् मांदान गुलमर्ग तथा शोपयाँ के बीच में यूस मर्ग के पर्वत पर स्थित है। जो कि वनों से ढ़का तथा घिरा हुआ है। तपस्या समाप्त करने के पश्चात स्वामी जी एक शांत और ख़ामोश संत बने और परमात्मा की याद में मस्त मगन रहे। परन्तु यह रहस्य ही रहा कि वे तपस्या के उपरान्त छुताबल में एक कुटिया बनाकर क्यों रहने लगे। उनदिनों छुताबल में बहुत ही थोड़ी आबादी थी। केवल कई एक हिन्दू घराने थे। शायद उन्होंने इसीकारण यहाँ रहना पसंद किया हो कि उनके गुरुदेव ज़नार्दन दर

सफ़ाकदल श्रीनगर में रहते थे। छुताबल सफ़ाकदल से एक किलो मीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ पर स्वामी जी की कुटिया थी। स्वामी जी के यहाँ आसनधारी रहने के कारण छुताबल की जनसंख्या उनके ही युग में बढ़ गई। क्योंकि बहुत से श्रद्धालू लोग बिला लिहाज़ मज़हब व मिलत उनके शिष्य बन गए थे। इस प्रकार आजका छुता बल बस गया था। उससे पहले लोग छुता बल आने से डर जाते थे।

स्वामी जी एक वैष्णव साधु थे। वे पक्के ब्रह्मचारी भी थे। अपने साथ सदा ही एक कुल्हाड़ी रखते थे। प्रायः वे इसी की पूजा करते थे। शायद इसी कुल्हाड़ी में उसके ज्ञान का रहस्य था। इसी की तपस्या करते करते उनको मुक्ती मिली थी।

कई राजे महाराजे भी स्वामी जी शिष्य बन गए थे। स्वामी जी केवल कशमीर में ही नहीं अपितु वह हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तान से बाहर भी बहुत प्रसिद्ध थे। जो इन घटनाओं से स्पष्ट होता है। इसकी वर्णना मैं आगे कर रहा हूं।

एक और दिन की घटना इसप्रकार है कि स्वामी जी वेजबिहाड़ा के एक पवित्र स्थान पर आसनधारण किए हुए थे और अपनी कुल्हाड़ी की पूजा कर रहे थे तो किसी ने आपसे पूछा " इस कुल्हाड़ी को पूजने का मतलब क्या है ?" स्वामी जीने हंसते हुए कहा— हुआ क्या यह देखो— स्वामी जी ने दूर से एक कुल्हाड़ी एक बड़े पत्थर पर मार दी। परन्तु अपनी कुल्हाड़ी वैसे की वैसी उनके हाथ में

रह गई। दूसरी कुल्हाड़ी पत्थर में फंस गई और वहाँ पर ही मौजूद रही। शायद इसी कारण कश्मीरी में एक उकती प्रचलित है। यह लोकोक्ती है "शंकरन्य मकुच़ ह्युव आसुन," अर्थात "शंकर की कुल्हाड़ी की भांति होना।" कश्मीरी लोग प्रायः कहते हैं:—

(क) " शंकरन्य मकुच़ ह्युव ह्युख रज़िथ गोमुत" अर्थात–"तुम शंकर की कुल्हाड़ी की भांति रह गए हो"।

दूसरी घटना इसप्रकार घटी– सावन का मास था। श्रावण पूर्णमाशी थी। हज़ारों लोग स्वामी अमर नाथ जी की यात्रा को गए। स्वामी जी अपनी कुटिया में समाधी लगाये हुए बैठे थे। अमरनाथ जी गुफ़ा के सारे इलाके में

उस दिन सख़्त तूफ़ान आया। मूसलाधार वर्षा हुई। लोगों को विपदाओं पर विपदाएँ भुगतना पड़ीं। कई लोग मर भी गए। स्वामी जी को आत्मज्ञान के कारण कुटिया में बैठे बैठे ही सब कुछ मालूम हुआ। ठीक उसी समय स्वामी जी श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफ़ा के पास प्रकट हुए। यद्यपि स्वामीजी अपनी समाधी में मगन अपने आसन से तनिक भी हिले नहीं थे। यह सुनकर यात्री चकित रह गए थे। कहा जाता है कि जब अमरनाथ जी की पवित्र गुफ़ा में तूफ़ान से तबाही मच गई थी तो स्वामी जी तुरन्त अपने मकान की सबसे निचली मंज़िल से ही रास्ता बनाकर वहाँ पर प्रकट हुए थे, और वहाँ पर लोगों को इस आपदा तथा विपती से बचाया था।

वर्ष 1869 की बात है कि एक अँग्रेज़ राजनैतिक देखरेख के लिए कश्मीर आया, उसको बर्तानिया सरकार ने ही नियुक्त किया था। उसका नाम मिस्टर फ़ोरसे था। वर्ष 1875 में बर्तानिया सरकार ने एक और पुलटीकल मिशन कश्मीर के रास्ते से सेन्ट्रल एशिया के लिए भेजा। इसका नेतृत्व भी मिस्टर फ़ोरसे ही कर रहे थे। जिसको औरम्यू ने चुना था। वह मलिका विकटोरिया का नज़दीकी सम्बन्धी था। उसका सिया-सत अर्थात राजनीति से गहरा सम्बंध तथा रुचि थी। मिस्टर फ़ोरसे सारे कश्मीर का दौरा करने के बाद लद्दाख की ओर चले गए थे। जहाँ से उसको अतालीगू ग़ाज़ी के साथ उत्तरी तुर्किस्तान

जाना था। कशमीर सरकार को आदेश दिया गया था कि वह इस मिशन की हर तरह से देखभाल करने का प्रबन्ध करे। मिस्टर फ़ोरसे को अतालीग़ ग़ाज़ी तथा याक़ूब बेग से भी मिलना था जिसने यारकन्द और काशग़र में अपनी स्वतंत्र सरकार का आरम्भ किया था। मलिका विकटोरिया को इस मिशन में विशेष दिलचस्पी थी। यह मिशन मिस्टर फ़ोरसे की देख रेख में चल रहा था। जब इस मिशन ने अपना काम पूरा किया तब मिस्टर फ़ोरसे सारे कशमीर का दौरा करने के पश्चात लद्दाख की ओर चला गया। और वहाँ से चीन की सीमा वाले पर्वतों की ओर गया। परन्तु रास्ते

सें वहाँ के लोगों ने उसे अजनबी । अपरिचित समझकर बन्धी बनाया और कई मास वह कारावास में रहा। कई मास तक मिस्टर फ़ोरसे का कोई पता न चल सका। विलायत में बड़ा शोर उठा। हिन्दुस्तान के वाईसराय के नाम विलायत से आदेश जारी हुआ कि मिस्टर फ़ोरसे का शीघ्रातिशीघ्र पता निकलवाएं। उस समय जम्मू कशमीर में महाराजादि राज महाराजा रणबीर सिंह राज करते थे। हिन्दुस्तान के वाईसराय ने उन से जवाब तलबी मांगी। काफ़ी बाज़ पुरुस हो रही थी। बहुत सारे आफ़ीसरों को यह सुराग़ न निकालने पर दंड दिया गया सज़ाएं मिलीं। महाराजा को मिस्टर फ़ोरसे का पता निकलवाने के सख़्त आदेश

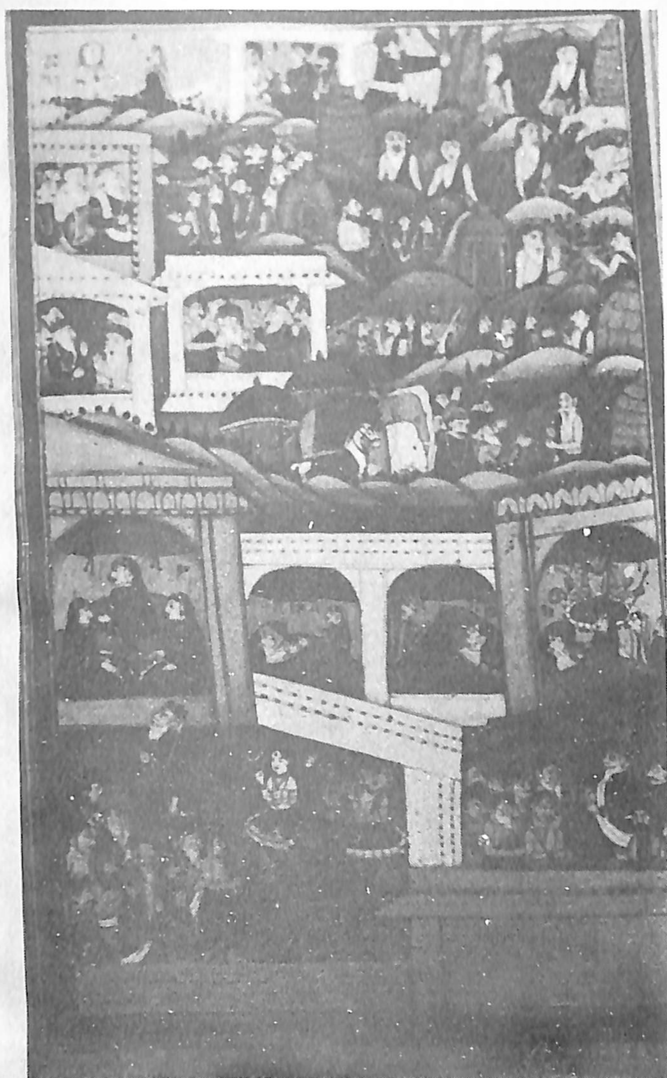
थे वाईसराय के। महाराज ने हर तरफ़ मिस्टर फ़ॉरसे का पता लगाने के हुकुम जारी किये। आदमी भेजे और काफी प्रयत्न किए परन्तु कहीं से कोई पता न चल सका। महाराजा बहुत मायूस हुए। उधर से मलिका विकटोरिया और वाईसराये हिन्द के दरबार से देरी होनेके लिए भी बाज़ पुरुस होरही थी। बहुत ही प्रयत्न किये जाने पर भी असफलता ही हुई। अब तो महाराजा को राजगद्दी से उतारने की धमकी भी दी गई। एक दिन महाराजा अपने राजभवन में बहुत चिंतित तथा व्याकुल बैठे थे तो उनके किसी एक कर्मचारी ने उनको स्वामी जी के पास जाने की विनती की। इसपर महाराजा तुरन्त खड़े हुए और सीधे संत जी के

पास आए और विनती की। संत जी ने महाराजा की प्रार्थना सुनकर कहा"— "गुम हुआ अंग्रेज़ दस दिन के बाद अपने आप वापिस आजायेगा" और हुआ भी ऐसा ही। मिस्टर फ़ोरसे ने श्रीनगर पहुँचकर स्वयं रिपोर्ट दी कि लद्दाख के इलाक़े में कई पुरुषों ने उसे बन्धीगृह में बन्द रखा था। दस दिन पहले एक व्यक्ति ने जो कशमीरी ढंग की पगड़ी बान्धे हुए थे मुझे वहाँ बन्धी गृह से खलासी दिलाई। वह पंड़ित वहाँ ही आए थे। यह वही दिन था ठीक जिस दिन महाराजा संत जी से विन्ती कररहे उनकी सेवा में बैठे थे। इधर विन्ती होरही थी और उधर संत जी लद्दाख के उसी स्थान पर चले गए थे जहाँ मिस्टर फ़ोरसे बन्धीगृह में थे।

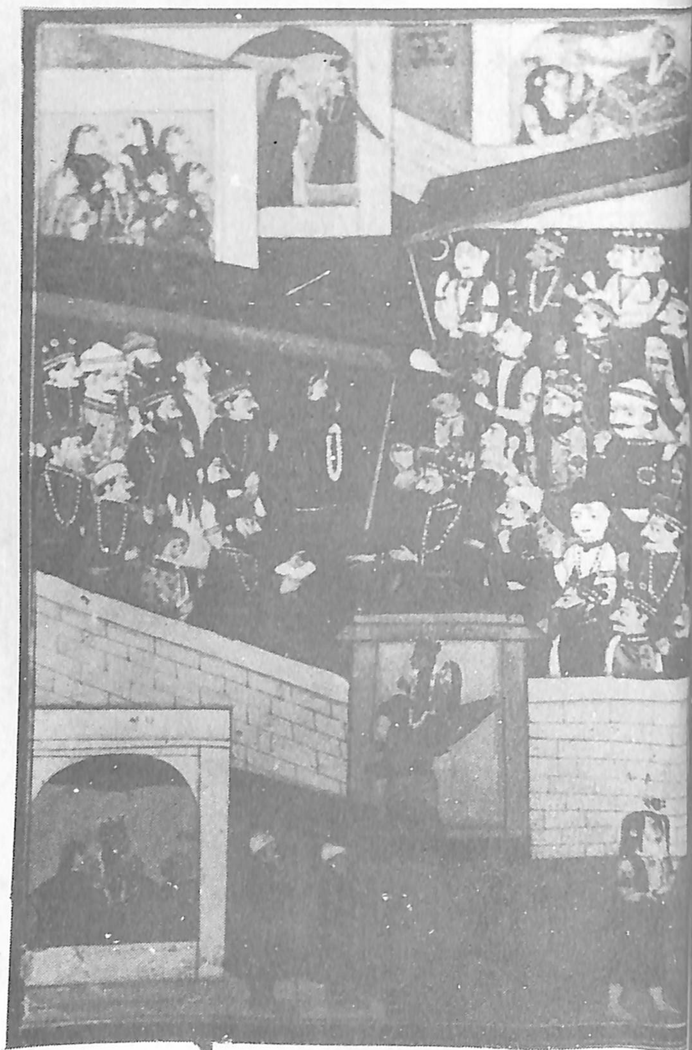
इस बात की पुष्टी मिस्टर फ़ोरसे ने ही स्वयं महाराजा के सामने की थी। संतजी के पास महाराजा के साथ जाकर मिस्टर फ़ोरसे ने स्वामी जी को पहचानकर कहा था कि इन्हीं के रूप वाले पंड़ित ने मुझे वहाँ से ख़लासी दिलाई। यह कहकर मिस्टर फ़ोरसे भी स्वामी जी के चरणों में शीश नवाए। इस घटना के कारण संत जी की प्रसिधि भारत में ही नहीं अपितु विलायत के दर्बार तक भी पहुँच गई। उस दिन से महाराजा रणबीर सिंह तथा महाराजकुमार प्रताप सिंह जी स्वामी जी के शिष्य बन गए। वे तो दोनों स्वामी जी की सेवा में रहते थे, वे प्रायः उनकी कुटिया में उनकी शरण में दिनों बैठते और वहाँ से जाने का नाम

तक नहीं लेते थे। मलिका विकटोरिया के दर्बार से भी स्वामी जी को प्राय: प्रणाम मिलता रहता। क्योंकि यह तो महाराजा रणवीर सिंह जी के शासन-काल की घटना है। अतः मैं महाराजा रणवीर सिंह के विषय में लिखना भी चाहता हूँ। महाराजा ने अर्थात गुलाब सिंह ने जम्मू कश्मीर को अंग्रेज़ों से वर्ष 1846 में मोल लिया था। इस तरह जम्मू व कश्मीर एक स्वतन्त्र राज्य बन गया था। महाराजा गुलाब सिंह के तीन बेटे थे। जिन के नाम उत्तम सिंह, सोहन सिंह और रणवीर सिंह थे। महाराजा रणवीर सिंह सबसे छोटे थे। व वर्ष 1830 ई० में जन्म पाये थे। उसके दो बड़े भाई वर्ष 1843 ई० में लड़ाई में मारे

गए थे। इस प्रकार महाराजा गुलाब सिंह जी ने फ़र्वरी 1856 ई० में महाराजा रणबीर सिंह जी को अपने हाथों से राज तिलक लगाकर अपनी राज्य गद्दी पर बिठाया था। इसके ढेढ़ वर्ष पश्चात महाराजा गुलाब सिंह का देहान्त हो गया। महाराजा रणबीर सिंह ने 29 उनतीस वर्ष तक राज किया। वह 12 सितम्बर वर्ष 1885 को 55 वर्ष की आयु में इस संसार से चल बसे। महाराजा रणबीर सिंह एक निडर, धर्मात्मा तथा बड़े विद्वान महाराजा हुए हैं। वह कई एक भाषाएं जानते थे। जैसे पश्तू, हिन्दी, संस्कृत, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, डोगरी और कशमारी इत्यादि। उसेन अपने राजकाल के दौरान गिलगत, नगर,



चित्र पत्र (५)



चित्र पत्र (4)

होंज़ा, चित्राल, यासबन, दरल, शनाली, और खुशोलेता को जीत लिया था। और अपने राज्य में सम्मिलित किया था। ये सारी घटनाएं वर्ष 1860 ई० से 1874 ई० तक घटीं। इसके अतिरिक्त उसने यारकंद, काशग़र, ख़तुन और मध्य एशिया की सरकारों से दोस्ती का हाथ बढ़ाया। यहाँ तक रूस के साथ इसी दौरान में उसने मिस्टर फ़ोरसे को वर्ष 1872 ई० में यारक़ंद में एक मिशन के साथ भेजा था। ताकि मध्य एशिया के देशों और बर्तानिया सरकार के बीच तिजारती मुहादा किया जा सके। यह वही मिस्टर फ़ोरसे थे जो इस से पहले इन्हीं इलाक़ों में गुम होगए थे। उन्होंने अपने शासनकाल में जम्मू व कश्मीर

में अपने पोस्ट एण्ड़ टेलीग्राफ़ महकमे खोले। अपना सिक्का (करेंसी) जारी किया। अपने ड़ाक टिकट जारी किये। उसके शासनकाल में कई मंदिर तथा मसजिदें का निर्माण किया गया था। जिन में जम्मू का रघुनाथ मंदिर, रणवीरेश्वर मन्दिर, गुलाब सिंह जी की समाधी (रामबाग़ श्रीनगर), यूनिवरसिटी उत्तर-सेनी, श्री प्रताप सिंह अजाइब घर, श्रीनगर इत्यादि इत्यादि। इसी के दौराने हकूमत में जामआ मसजिद को नये तरीके से बनवाया। इतना ही नहीं वे एक सच्चे हिन्दुस्तानी और आज़ादी के मतवाले थे। ये इतने निड़र थे कि इस ने अपने शासन में अंग्रेज़ों को कशमीर में यूनियन जैक तक लहराने

नहीं दिया।

स्वामी जी ने अपने रामायण को समाप्त करने के अवसर पर यह कहा था:—

" समवत् पांचुतांजी लेखन तय,
शारदा कपुरो सपुद पूरण।
राजि रंणबीर ओस देशपालन तय,॥
सर्वात्मा बासदीव पूरण ॥०॥

एक बार का वृतांत इस प्रकार का है। एक बार महाराजा साहिब अपने कई कर्मचारियों के समेत स्वामी जी की कुटिया में पधारे। उनके कर्मचारियों में फ़ौज़ का एक जरनैल भी शामिल था। संत जी के यहाँ चाय तैयार थी। संत जी ने महाराजा और उसके कर्म-चारियों को चाय पीने को कहा। जोकि

पहले ही इस अमृत रूपी प्रशाद के लिए
तरस रहे थे। स्वामी जी के आदेश पर
एक सेवक जिसका नाम राम जी था, ने
उनके लिए चाय लाई। चाय तब तो समाव
में बनाई जाती थी। अकस्मात चाय की गर्म
धारा बड़े जरनैल के कन्धे पर गिर पड़ी
और उसका कंधा जल गया। जरनैल साहिब
जलन से खामोशी से सहन करता रहा और अंदर
ही अंदर कराहता रहा क्योंकि महाराजा
साहिब तो वहाँ पर मौजूद थे। महात्मा
जी को आँतरिक ज्ञान से सब कुछ पता
चलता था। उनको इसकी जलन का भी
ज्ञान हो गया। उनको यह सब महसूस
हो गया और वे स्वयं अपने कंधे को
खूब मलते रहे, मलते ही रहे जब तक जरनैल
का कंधा ठीक हो गया परन्तु स्वामीजी

के कन्धे पर जलने के निशान तथा घाव दिखाई देने लगे और कई दिन तक स्वामी जी के कन्धे पर जलन रहे।

एक दिन की घटना इसप्रकार रही — कहते हैं महाराजा ने स्वामी जी के लिए अपने एक फ़ौजी अफ़सर के हाथ आमों की टोकरी भेज दी थी। ज्यूँही फ़ौजी अफ़सर ने आमों की यह टोकरी स्वामी जी के सामने रखी तो स्वामी जी बोल उठे ये झूठे आम हैं, इनको हटाओ-। फ़ौजी अफ़सर बड़ा परेशान हो गया क्योंकि उसने तो ये आम बड़े आदर तथा मान के साथ लाए थे। ये झूठे कैसे हुए। ज़बान से कुछ न कहा। अब स्वामी जी ने प्रश्न किया:— "कितने आम दिये थे?

फ़ौजी अफ़सर ने कहा— महाराज गिने नहीं। इसी तरह टोकरी सीधे उठा लाया हूँ। तब स्वामी जी बोल उठे। क्या कोई आम इसमें कम नहीं है? फ़ौजी अफ़सर ने एक आम किसी को रास्ते में दिया था। उसे याद आ गया। उसने तुरन्त अपनी ग़लती मान ली। देखते ही देखते वह आम भी स्वामी जी के हाथ में आगया। तब तो स्वामी जी ने वे आम स्वीकार किये।

महाराजा साहिब ने स्वामी जी के लिए एक अच्छा सा भवण निर्माण करना चाहा। इस इच्छा को पूरा करने करने के लिए उसने योग्य अंग्रेज़ इनजीनियर भेजे। वे जब स्वामी जी

की कुटिया के पास खुदाई इत्यादि का काम आरम्भ करने लगे तो अन्दर खुदाई का शोर सुनकर स्वामी जी ने अपने सेवकों से कहा। ज़रा देखो बाहर हमारी बसती को कौन खराब कररहा है। वापिस आकर शिष्यों ने कहा — महाराज सरकार ने कुछ इनजीनियर भेजे हैं जो आपके लिए एक भवण निर्माण करने के स्थान की पैमाइश कर रहे हैं। इस पर स्वामी जी क्रुध हुए और बाहर निकलकर उनको रोका और खूब ड़ांटा। जिस पर अन्ग्रेज़ इनजीनियर अपना सा मुंह लेकर वापिस चले गए। स्वामी जी ने सरकार को यह भी सन्देश भेजा कि यदि सरकार मेरी कुटिया में आने में लज्जा का अनुभव करते हैं तो यहाँ आने की तकलीफ़

न किया करें। ज्यूँही यह संदेश महाराजा को सुनाया गया तो वह तुरन्त स्वामी जी के पास आए और क्षमा के लिए बड़ी नम्रता से विनती की और कई दिन वहीं कुटिया में रहे। वे बराबर कशमीरी ढंग से रहे और कशमीरी तरीके का खाना भी खाते रहे। इसी दौरान महाराजा ने श्री रामजुव साहिब राज़दान जिसको संत जी अपना लड़का मानते थे, को नौकरी पर लगाने की आज्ञा मांगी, परन्तु संत जी तनिक न माने। सरकार के आग्रह तथा विनय पर स्वामी जी ने उनसे कहा—" यदि आप इसको नौकरी देना ही चाहते हैं फिर तो इसका वेतन इतना ही होना चाहिए जिससे केवल इसका पेट पल सके।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि यह रामजुव राज़दान कौन हैं? क्या वह स्वामी जी के असली सुपुत्र थे? क्योंकि स्वामी जी ब्रह्मचारी थे। उनका ब्रह्मचारी होना तो आवश्यक है; क्योंकि स्वामी जी ने बालकअवस्था में ही सन्यास धारण किया था। सुनने में आया है कि श्री रामजुव को स्वामी जी ने गोद लिया था। जैसा कि उसके शिष्य स्वामी नरायण जुव गंजू रैणावारी निवासी से ज्ञात हुआ है। श्री गंजू रैणावारी निवासी भी एक संत थे। उन्होंने ही मुझे बालकपन में स्वामी शंकर राज़दान के चमत्कारों परिचित किया था। जो कि मैं ने वर्ष 1965 ई० में एक पुस्तिका में किंचित रूप से प्रकाशित

जो "मेरे बुज़रुग देवता" के नाम से जानी जाती है। इसी प्रकार श्री रामजुव के बारे में मुझे बताया कि छताबल के मुहल्ले में एक विधवा रहती थी जिसका केवल एक इकलौता बेटा था। एक बार उसके इस इकलौते बेटे को "माता" अर्थात चेचक की बीमारी लगी। और वह इस संसार से चल पड़ा। यह असहाय विधवा रोते रोते स्वामी जी के पास और बहुत ही विनती की कि उसका इकलौता बेटा गहरी नींद सो गया है। भगवान के लिए उसे जगा दें। किसी तरह से उसे जगा दें नहीं तो मैं भी यहीं पर अपनी जान दे दूँगी। संत जी उसके इस आग्रह पर मान गए। और कहा यदि लड़का परमात्मा की

दया से जाग उठा तो उसे हमारे पास रखना होगा। विधवा ने तुरन्त मान लिया। स्वामी जी ने अपनी पूजा का जल इस लड़के के मुंह पर फैंका और फिर क्या था लड़के की आँखें खुलने लगीं। स्वामी जी ने उसका नाम रामजुव रखा। बड़ते बड़ते यह भी गृहस्ती साधु बन गए। इस बात की साक्षी मेरे बुज़ुर्गों ने भी दी है। इसलिए इस घटना की पुष्टी भी होती है। क्योंकि स्वामी जी राम भक्त थे। इसी कारण उन्होंने इस लड़के का नाम भी राम ही रखा। जो एक महापुरुष थे। महानुभाव थे। इतना ही नहीं अपितु एक निपुण सियासतदान थे। धीरे धीरे अपनी योग्यता तथा निपुणता से सरकार

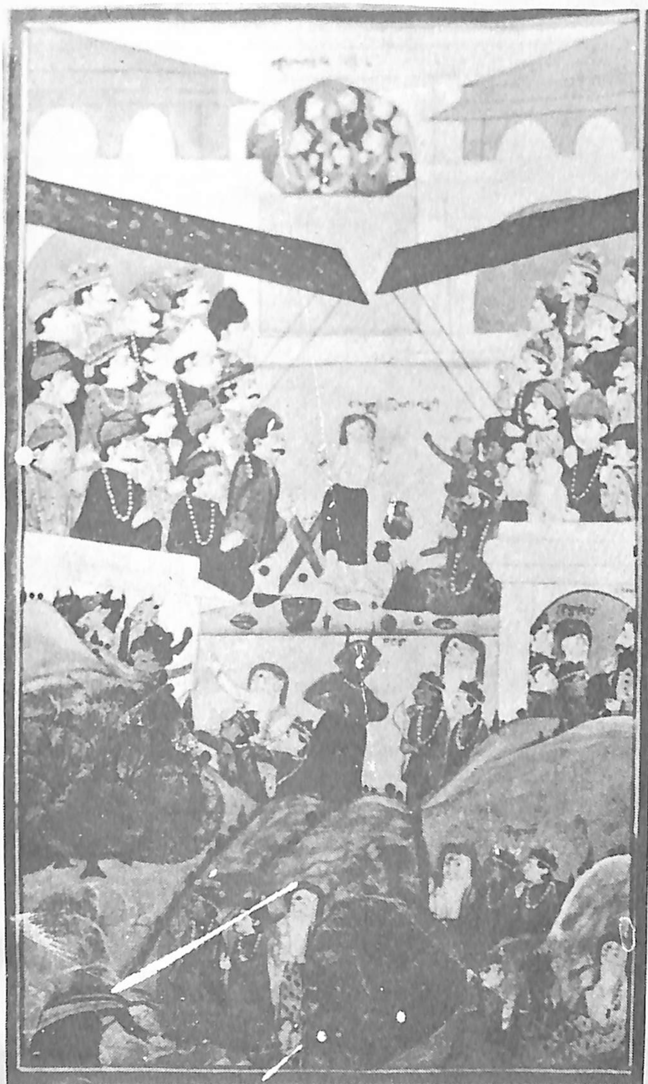
के उच्चपद को संभाला। आप पहले कशमीरी हैं जो मिलट्री सेक्रीट्री रहे हैं। और यह चार्ज फिर एक अँग्रेज़ मिस्टर चेम्बरलिन साहिब ने संभाला और राम जुव ने राज्य की सबसे ऊँची पदवी प्राप्त की। वही सबसे पहले कशमीरी हैं जिन को हिन्दुस्तान के वाईसराय के दरबार में एक प्रतिनिधी चुना गया। आप राजा अमर सिंह के मुशीर भी रहे। राजा अमर सिंह महाराजा रणवीर सिंह के छोटे बेटे थे। महाराजा रणवीर सिंह के तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं। जिनमें महाराजा प्रताप सिंह सबसे बड़े बेटे और उसके बाद राजा राम सिंह थे। इसी दौरान जब 1931 बिक्रमी में स्वामी जी को निर्वाण प्राप्त हुआ तो महाराजा रणवीर सिंह जी ने

श्री रामजुव को स्वामी जी की याद में उनकी समाधी पर एक मंदिर का निर्माण करवाके देदिया। जोकि रत्न ज्योती मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर का नाम "रत्न ज्योति" क्यों रखा गया है। मैं ने पहले ही निवेदन किया है कि बच्चपन में एक दिन दिये में जब तेल खत्म हुआ और स्वामी जी की कृपा से यह दिया तेल के विना ही जल उठा था। इसी कारण इसका रत्न ज्योति मंदिर नाम दिया गया है। यह मंदिर आज भी राज़दान कोचा दानावारी हत्ताबल में मौज़ूद है। जिसमें स्वामी जी के वस्त्र इत्यादि दर्शनार्थ रखे गए हैं। और साथ ही उनकी दोनी का बस्म अभी तक सुरक्षित रूप से मौजूद है। इस मंदिर में महाराजा रणवीर सिँह, महा-

राजा प्रताप सिंह और महाराजा हरी सिंह जी माथा टेकने के लिए आते रहते थे। मंदिर में स्वामी जी की खड़ाओं, कुल्हाड़ी और ठाकुर द्वार मौजूद हैं। महाराजा रणवीर सिंह जी ने इस मंदिर की देखभाल के लिए 250 कनाल ज़मीन जागीर के तौर मनिगाम के स्थान पर जो कि गांदरबल के प्रांत में स्थित है, ऐसा किया था जो कि मंदिर के लंगर तथा इनके वंशजों, उत्तराधिकारियों के निर्वाह के लिए दिया गया था। मंदिर में लंगर रोज़ खुला रहता था। जहाँ पर हर कोई भोजन कर सकता था। जो वहाँ आता था और इच्छा वाले खाना खाते थे। प्रतिवर्ष दो बार दो महा यज्ञ रचाए जाते थे, जिन में हज़ारों

श्रद्धालू लोग सम्मिलित होते थे। धर्मरथ ट्रस्ट मंदिर की देखभाल भी करता था। और मंदिर को प्रति मास तीस रुपये दीप के लिए दिये जाते थे। एक पुजारी भी रखा गया था। कहते हैं वह पुजारी भी बड़ा महान था। वह कन्या कदल में रहता था जिसका नाम विशम्भर बाबू था। वह प्रातः 5 बजे से पहले ही मंदिर में पूजा के लिए आया करता था। परन्तु उस पुजारी के देहान्त के पश्चात स्वामी जी के पौत्र पौते इत्यादि स्वयं प्रतिदिन प्रातः सायं पूजा पाठ का कार्य करते थे। धर्मरथ की ओर से वार्षिक मरमत भी हुआ करती थी इस मंदिर की। परन्तु महाराजा हरी सिंह जी के कश्मीर छोड़ने के बाद यह सारा सिलसिला बंद

होगया। इतना ही नहीं जो ज़मीन इसके साथ रखी गई थी, भी छीन ली गई। यह जो ज़मीन मनिगाम में थी। उस जागीर के स्वामी कशि काक जी भी एक काश्तकार थे, चूंकि स्वर्गीय शेख़ मुहम्मद अब्दुल्लाह तथा मुहम्मद अफ़ज़ल बेग संत कशि काक के पास आया करते थे और उन्हीं दिनों लैंड् औगरेन एक्ट पास हुआ था। काश्त-कारों ने इस अवसर का लाभ उठाकर शेख साहिब तथा अफ़ज़ल बेग को झूठे निवेदनपत्र देकर इस ज़मीन पर कब्ज़ा किया। जबकि अफ़ज़ल बेग ने 1950 ई० में यह सारी जागीर बिना किसी क़ानून के ग़लतफ़हमी से किसानों में बाँट दी। उस समय मिर्ज़ा अफ़ज़ल बेग ही रेवन्यू मिन्सटर भी थे। इसीकारण मंदिर का लंगर



चित्र पत्र (६)



चित्र पत्र 7

बंद होगया। अवामी हकूमत का यह पहला कदम था। यद्यपि इससे पहले प्रत्येक धर्मों के लोगों के लिए खुला रहता था। अब तो स्वामी जी के वंशज ही इस मंदिर की देखभाल कर रहे हैं, ताकि सदा से जलती आई वह रत्नज्योति बुझने न पाए। यह मंदिर श्रीनगर शहर के दक्षिण में अलग थलग स्थान पर अंतिम मंदिर है। संत शंकर राज़दान (शंकरर्‍य मकुच) की याद को ताज़ा करने वाला यह मंदिर यद्यपि प्राईवेट हैसियत रखता है फिर भी भगवान का घर हर एक के लिए खुला रहता है। आर हर एक इसको अपने अपने विश्वास के अनुसार इससे लाभ उठाते हैं। इस जागीर का प्राप्त करने के लिए स्वामी

जी के वारिसों ने 1950 में अदालत में मुक़दिमा दर्ज कराया जिसका फ़ैसला मंदिर के पक्ष में 28 दिसम्बर 1968 ई० में हुआ है और काश्तकारों की अपील का फ़ैसला भी मंदिर के पक्ष में हाईकोर्ट अंतिम न्यायालय बैंच ने वर्ष 1972 ई० में दिया परन्तु कृषकों ने एक और बहाना बनाकर एक और नुक़्ता उभारा जो हाई-कोर्ट में वर्ष 1949 से चलता रहा लेकिन 1976 ई० के लैंड़ अेगरेन एक्ट के पास होने पर इस केस को हाई कोर्ट लैंड़ अेगरेयन कमिशनर को मज़ीद कार्यवाही के लिए भेजा। यह ग़लती से हुआ। जो कानूनी तोर भी ग़लत ही थो। अब इस बारे में मैं ने भी एक रिट हाई कोर्ट में दायिर की है। जो अभी चल ही रही है।

इस प्रकार यह मुक़दिमा अब 39 वें वर्ष में आरहा है। परन्तु जब तक न्याय न हो यह तो चलता ही रहेगा। क्योंकि इस मंदिर को हिन्दू, मुसलमान, सिख तथा ईसाई आदर तथ सम्माण करते हैं। क्योंकि स्वामी जी के ही उपकार तथा कृपा से आज छतावल ने इतनी उन्नति की है। अब तक जो कुछ मैं ने पेश किया वह तो सारा सुनी सुनाई पर आधारित था या कुछ इतिहास से सम्बंधित था। परन्तु अब स्वामी जी के उन चमत्कारों का उल्लेख करूँगा जो इन मौजूदा कई वर्षों में प्रकट हुए हैं। एक दिन मैं मंदिर के इहाते में बैठा था कि एक मेरा मुसलमान पड़ोसी आया। वह मेरे घर वालों और मेरे सामने

ज़ार ज़ार रोया और कहा कि उसकी छोटी बेटी जो 8 वर्ष की आयु की है, सख्त बीमार है। और उसको हस्पताल वालों ने भी निराश होकर निकाल दिया है। लड़की के बचने की कोई आशा नहीं है परन्तु आज रात हमारे स्वामी जी मेरे सपने में आए और मुझे कुछ दान (नियाज़) करने का आदेश दिया ताकि मेरी बेटी ठीक होजाएगी। मैं तो हैरान हो गया। साथ ही उसने कहा कि नियाज़ में मांस का भी प्रयोग करना है। मेरे घर वालों ने उसे नहीं माना क्योंकि हम वैष्णव हैं और हमारे घर मांस पकता ही नहीं है और स्वामी जी भी मांस नहीं खाते थे। करें तो क्या करें! मैं व्याकुल हो गया। मैं ने उसे इन्सानियत के नाते कहा-

जाओ जो कुछ स्वामी जी ने कहा वही करलो। परन्तु मंदिर से थोड़ी दूरी पर करना— वह बेचारा प्रसन्न होगया। उसने अपने धर्म के अनुसार नियाज़ इत्यादि का काम बड़ी श्रद्धा से किया। क्या हुआ कि दूसरे ही दिन वह पड़ोसी मुसलमान मंदिर की सीढ़ियों पर अपना शीश रखकर दुआएँ देता रहा। और कहा मेरी बेटी बिल्कुल ठीक होगई।

इसी प्रकार की दूसरी घटना उस समय हुई जब मेरे छोटे भाई ने एक मुसलमान आर्टिस्ट को स्वामी जी चित्र बड़ा बनाने के लिए दिया। इस आर्टिस्ट ने स्वामी जी का चित्र बनाया। ग़लती से उसके ब्रश का एक बाल स्वामी जी के मुख पंकज पर चिपक गया था जो सूखने पर हाथ से उठाया न जा सका तो

उस आर्टिस्ट ने ब्लेड से उस बाल को हटाया। इस पर हुआ क्या कि रात को स्वामी जी उस चित्रकार के सपने में आया और कहा— देखो तू ने मेरे मुँह का क्या किया है। स्वामी जी ने उसे अपना मुँह दिखाया जिस पर घाव लगा था। "मैं ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था"? यह कहा और सपना टूट गया। आज कल भी मुसलमान स्त्री पुरुष मंदिर के सामने शीश झुकाते हैं और अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि इन सोफ़ियों, संतों को धर्म तथा मज़हब से बढ़कर नेकी, भलाई तथा मानवता के साथ लगाव रहता था।

यद्यपि इस समय मंदिर मंदिर की कोई भी आय नहीं है तिस पर भी

स्वामी जी के वंशज और भक्त इस मंदिर की देखभाल में कोई कसर उठाए बिना नहीं रहते। मैं भी उन्मेंसे ही एक सेवक हूँ। मैं स्वामी जी के एक पौते के नाते तथा उनकी ही दया उस से जो समय समय पर मुझ पर हुई है एक रक्षक (Care taker) के रूप से मैं अपनी पूरी श्रद्धा तथा भावना से मंदिर की देख रेख के प्रति अपना कर्तव्य पालन करता हूँ। मैं स्वामी जी की बहुमूल्य पुस्तकों के छापने का तथा इनके प्रकाशन का तनमन से प्रयत्न कर रहा हूँ। यद्यपि इस कार्य में कई कठिनाइयाँ बाधा डाल रही हैं। जैसे :— उनके रामायण तीन भाषाओं में हैं। एक संस्कृत भाषा में है जिसकी लिपि शार्दा (कशमीरी) है। दूसरा हिन्दी भाषा में है जो देवनागरी लिपि में लिखा

गया है। और तीसरा कशमीरी भाषा
में है और इसकी लिपी फ़ारसी है। जो
रामायण हिन्दी भाषा में है, जिसे देव-
नागरी लिपि में लिखा गया है। वह
Asian Art Galary ऐशियन आर्ट गैलरी
कशमीर यूनिवर्सिटी में सुरक्षित तथा
मौजूद है। संस्कृत भाषा में लिखा हुआ
तथा कशमीरी भाषा का रामायण मेरे
पास सुरक्षित है। इनके अतिरिक्त अनेक
भजन तथा लीलाएँ और वाक्य (कशमीरी)
मेरे पास मौजूद हैं। मैं ने मान्यवर
डाक्टर (महाराजा) कर्ण सिंह जी की
सेवा में अपील की थी कि वह इस
काम में मेरी कुछ सहायता करें।
जिस की उन्होंने पूरी सहमति दी
थी। अतः मुझे सम्पूर्ण आशा है कि

मैं यह काम अवश्य ही कर पाओंगा। शेष भगवान की इच्छा। साथ ही डाक्टर फ़ारोक़ अब्दुलाह ने भी मुझे इस कार्य में सहायता देने का प्रण किया था, मुझे पूरा विश्वास है कि वे मेरा हाथ बटायेंगे। क्योंकि डाक्टर फ़ारोक़ अब्दुलाह हमारे प्रिय मुख्य मंत्री हैं। इन पवित्र पुस्तकों के प्रकाशन में कम से कम पचास हज़ार (50,000) रुपयों की आवश्यकता है। क्योंकि जो रामायण संस्कृत भाषा में है वह रामायण आर्ट चित्रों में भी दिखाया गया है। केवल एक चित्र को प्रकाशित करने में एक हज़ार रुपया खर्चा आता है। इसके अतिरिक्त में इसमें लिखे लेखों पर रिसर्च (Research) तहक़ीक़ कर रहा था। यदि कोई सज्जन इस विषय

में मेरी कुछ सहायता तथा कशमीरी साहित्य की कुछ सेवा करने का इच्छुक हो तो मैं उसे अपना सौभाग्य समझूँगा। जो कशमीरी रामायण है वह पुरानी लिपि में लिखा गया है। उस लिपि तथा आजकल की स्वीकृत लिपि में काफ़ी अन्तर है। इसलिए यह रामायण पहले प्रचलित कशमीरी लिपि में लिखना आवश्यक है। और उस के पश्चात उसे प्रकाशित किया जा सकता है। जिसके लिए मुझे किसी सज्जन से सहायता लेना होगी। इनही बाधाओं के कारण इस कार्य में देर हो रही है। नहीं तो यह पुस्तक कब की छप गई होती। क्योंकि यह जीवन संसार रूपी सागर में हिचकोले खा रहा है और इस का अन्त मृत्यु है। मृत्यु से हंसते हुए

मिलने को तैयार रहने के लिए मानव को भगवत् स्मरण में लीन रहना चाहिए। ताकि जीवन शाँति से बीत सके। बचपन गया, जवानी गई, बुढ़ापा आया और मृत्यु का यमदूत अब मानलो सर पर ही नृत्य कररहा है। मनुष्य इस नशवर संसार में अकेला आया, अकेला रहा और अकेला ही चला जा रहा है। दूसरा कोई साथी नहीं, संगी नहीं और सहायक नहीं। कोई सम्बन्ध या सम्बन्धी साथ नहीं देता है जिसके लिए न जाने कितने पाप करता है। चुग़ली, झूठ, छल, कपट, धोखा, फरेब, अत्याचार और चोरी इत्यादि करते हैं। वे रिशतेदार भी साथ नहीं देते हैं। हाँ बस एक भगवत स्मरण ही वास्तविक तथा सच्चा रास्ता है। और संत शंकर राज़दान की जीवन यात्रा के विषय में

पढ़ने से मनुष्य अपने आपको भूल जाता है और उसी सत्य स्मरण में मगन होजाता है। मैं ने इनके जीवन के हालात बहुत ही कठिनाई से प्राप्त कर लिए हैं और अभी भी इस खोज में बराबर प्रयत्नशील हूं। मैं प्रत्येक पाठक से नम्रता से विनती करता हूं कि यदि किसी को इस संत के जीवन का काई ज्ञान हो तो वह मुझे इसकी जानकारी दें ताकि मैं अपने इस कार्य में सफल हो जाओं। मैं उसका आभारी रहूंगा। क्योंकि जो रामायण स्वामी जी ने कहा है वह सब से पहले शिवरात्रि पर लोगों के सामने पेश किया गया है। इस विषय में स्वामी जी ने कहा है:——

"शिवरांत्री दोह्‌ं सम्पूरण तय,
प्रकाश रामनि कोर शेंकरन॥"

स्वामी जी की ऐसी लीलाएँ हिन्दू स्त्रियाँ विवाह तथा शादियों पर गाती हैं। परन्तु इन भजनों तथा लीलाओं को लोग कई दूसरे संतों के साथ जोड़ते हैं। इस में उनका दोष नही। ऐसा केवल इनका ज्ञान न होने से हो जाता है। इसी कारण इनका प्रकाशन अनिवार्य है। आपकी जानकारी के लिए मैं स्वामी जी की कई लीलाओं की पहली पंक्ति यहाँ लिख रहा हूँ। ——

(१) पोश फोंलुम पाशि थरे
करुयो गूर गूरय।
सग दिमस हेंयमि कले,
तमि सांत्य पोशफोले
योंलि ज़ायास मांजे, दिव्ननम दोद पांजे।
सीवा केर में बुजे ॥ करुयो गूर गूरय॥०

तत्यथ च़ास वाव अंदर, कमकम द्रायि गंदर।
श्रोंप्य वैंयि मेंचि़ अंदर॥
करुयो गूरु गूरय ॥०॥

मेंच़ बेंयि मेंचि़ मेंच़ुय, हेंरि बोनु आसि मेंचुय।
मेंचि़ मंज़ु सारि मेंच़ुय॥
करुयो गूरु गूरय ॥०॥

सीव कर खावंदस, ध्यव रोज़्यस वोदंस।
मिलुवय दोद कंदस॥
करुयो गूरु गूरय ॥०॥

वोंबुर छुय क़ालु दिवन, खंटिथ छुय ड़ालु निवन।
प्राण रंटिथ अथि यिवान॥
करुयो गूरु गूरय ॥०॥

कवु छुखवति रावान, संसार तंबुलावान।
लूर छय नु छुख हावान॥
करुयो गूरु गूरय ॥०॥

ग़ाफ़िलो गछ़ु बेदार, कनि ज़ान मोहरत द्योर।

कंड़्यज़ाल मोहं संसार॥
मनु कारु रामु रामय॥०॥

हिन्दी अनुवाद

शाखा पर फूल खिलते हैं। मैं तुम्हें भूला भूलती हूँ। मैं इस शाखा के ऊपरले भाग को सींचीं ताकि इस में फूल खिलेंगे। जब मैं ने अपनी माता की गोद में जन्म लिया। तो मेरी माता ने मुझे दूध के बड़े बड़े डोल पिलाए। पेट भर भर के खूब दूध।

इस मट्टी में न मालूम कितने अच्छे अच्छे फूल खिले अर्थात कितने मनुष्य कितने महानुभाव उत्पन्न हुए परन्तु प्रत्येक का यही अन्त था कि जिस मट्टी से निकला उसी में फिर मिल गया। मट्टी के साथ मट्टी होगया। ऊपर नीचे मट्टी ही मट्टी है।

मट्टी में सब ही मट्टी है। मैं तुम्हें भूला भूलूँ। तुम अपने पति की सेवा कर ताकि उसके मन में आप का प्यार रहे। तुम उसके लिए दूध में मिश्री मिला ले ताकि भविष्य में आपको इसका मीठा फल मिले। भंवर तुम्हारे चारों ओर है। और वह छुप छुप कर तुम को घेर लेता है और लेकर ही रहेगा। जब तक कि यह तुम्हारे प्राण ही छीन लेता है। तुम अपने रास्ते से क्यों भटक जाते हो। और इस संसार को क्या भटका रहे हो। तुम तो स्वयं भी भटक जाते हो। पास कोई हड्डी इत्यादि है नहीं परन्तु झूठ मूठ दिखाने का प्रयत्न कर रहे हो।

अरे भूले भटके तुम भूल के सपने से जाग उठ! धन, सम्पत्ति को पत्थर के समान समझ ले। मट्टी के समान बे फ़ाइदा, स्वार्थ, लालसा और मोह का यह संसार

रत्न ज्योति मन्दिर (अन्दरूनी भाग)



चित्र पत्र (१)

शूल तथा काँटों से भरा हुआ है। यह सारे का क्षेत्र दुखों तथा आपदाओं और विपदाओं से घेरा हुआ है। तू यह लोभ मोह तथा लालस छोड़ दे और शुद्ध मन से राम का नाम जप ले। उसी से तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

— रैणा

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ शुकलम् जय गणीश्वरो,
बाल चंन्द्रो नमस्कार ।

मूषकु वाहनु लोम्भू दुरो,
गज़ मोखु ड़ेंकि छुय सोम आकार।
शेरस मुकटु छुय शूभान करो ॥
बालु चंन्द्रो नमस्कार ॥०॥

फलु वर दातु छुख गणीश्वरो,
विघ्न हरतारु छुख रछ़ाकार ।
सिद्धि दाता छुख सिद्धि ईशारो ॥
बालु चंन्द्रो नमस्कार ॥०॥

चोर बोंज़ आसवुनि छुय बेंयि करो,
त्रें नेथुर शूभ वुन चंन्द्रमु तार ।
वलुना सांत्य ह्यथ गणीश्वरो ॥
बालु चंन्द्ररो नमस्कार ॥०॥

सर्वारि च़ेंय छी ज़ुय गगारो,
च़ुय कुख मंक्रयन विघ्नहरतार।
शंकर् डेंकि छिस त्रें नेत्रो ॥
बाल् च़न्द्रो नमस्कार ॥०॥

●

शिव् शंकर् ती हरी हरो।
च़ुय ईशारो दया कर॥
आनन्द् सौन्दर विघ्न् हर्तारो,
शोभ् फल च़ुय दिमबेंयि रत्यवर।
शरणुय आसय अंजीशारो ॥
च़ुय ईशारो दया कर ॥०॥
मायायि कंन्ड्य ज़ाल च़ठतम हरो,
ज़ांन्य सांत्य ज़ांन्य हुन्द म्च़रुम ब्बर।
तव् सांत्य येंमि समसार् निशि तरो ॥
च़ुय ईशारो दया कर ॥०॥
सुलि में च़्युनुमन्, त्, गोम अथ्शरो,

ज़ोनुम न् समसारुक सागर।
यैमि सर् वनतम कित्थ् पाठ्य तरो॥
च़ुय ईशारो दया कर॥०॥

गुर् रूप् कासतम गटुमाशरो,
वनतम यिथ् पांठ्य शंकर् तर।
तमि विना छुम नो आसरो॥
च़ुय ईशारो दया कर॥०॥



आनन्द् ईशारो शक्ति आकारो
ड़न्ड़्वत कर् हांय नमस्कार
प्रेज़ि मन्ज़ बसिथ छुख परमीशारो,
ज़गि मन्ज़ सारिकुय छुय आधिकार।
अस्तुत कर् हांय गंगाधारो॥
ड़न्ड़्वत कर् हांय नमस्कार॥०॥
जयकार मंग्यनय जटादारो,
च़ेंय छी नील् कंठ् नांल्य शाहमार।

ड़ेंकि क्षी शुभुवुन्य च़ंन्द्रमु तारो॥
डन्ड़ुवत करहांय नमस्कार॥०॥
ज़ेटि मंज़ वसुवुन्य गंगाधारो,
अथि छुस त्रिशूल कलुमालादार।
वेंह छुय कोरंमुत च़ेंय अहारो॥
डन्ड़ुवत करहांय नमस्कार॥०॥
ब्रशवस खंसिथ छुख सरदारो,
पार्वती सहित पद्मादार।
मंज़ छुख सांर्यसुय वुमादारो॥
ड़न्ड़ुवत करहांय नमस्कार॥०॥
सूरमति सन्यासु न्यराकारो,
भेंछयन क्युत छुख दयाकार।
शेमु फल दितम च़ुय कृपाकारो॥
ड़न्ड़ुवत करहांय नमस्कार॥०॥
अंनिस कासतम अन्धयकारो,
ओंनस कासतम खय ज़ंगार।

क्रूध, काम, लूभ, मद, मोह न्यवारो॥
डन्ड़वत करहांय नमस्कार॥०॥

मनि मंज़ वंन्य द्यू हा"शंकरी",
अथ मंज़ बंसिथ क्वय कुनुय ओंकार।
द्राह वेंह शांमिथ लक्ख शुन्याकारो॥
डन्ड़वत करहांय नमस्कार॥०॥

●

स्व मन लीला करहां चांनी।
सांन्य भवांणी जय जयकार॥
गरि नेरहा ह्यथ दोद बानय,
ज़ाल मोख तीज़स करय जयकार।
च़य छुख संसार सर तारवांनी॥
सांन्य भवांणी जय जयकार॥०॥
तुलमुलि सिक्षम छुख आसवांनी,
रांझ्रांय समयिच रक्षाकार।
राजा, राजन राज दीवांनी॥
सांन्य भवांणी जय जयकार॥०॥

समीरस प्यठ छुख न्यथ बेहवांनी,
तरंगे ज़लस प्यठ सर्वण आकार।
भंक्यन मोख्ती च़ुय दीवांनी ॥
सांन्य भवांणी जयजयकार॥०॥

आंर्त्यन आंरच़र छुख कासवांनी,
सांयिसुय प्यठ छुय च़ेंय आधिकार।
अष्टादश बीज़ छुख आसवांनी ॥
सांन्य भवांणी जयजयकार॥०॥

च़ेंय निशि संद्य साद छी नेरांनी,
कासतम खय मनि मोह ज़ंगार।
दितम वर वसन मौख्ती बनांनी ॥
सांन्य भवांणी जयजयकार॥०॥

हावतम दर्शुन छुख प्रज़लवांनी,
असुरन कोंरुथ च़ेंय समहार।
हारि रूप संमीर प्यठ एकु भवांणी ॥
सांन्य भवांणी जयजयकार॥०॥

काशमीर मंड़लस छुय दया चांनी,
ज़ल होंखुस राह्निसन कोंरुथ समुहार।
दयायि चानि सांत्य फल वोपज़ानी ॥
सांन्य भवांणी जय जय कार ॥०॥
भंक्तिस तोशातम छुस वनांनी,
'शंकर' ओरुत च़्रय कन दार।
करतम दया दया करुवांनी ॥
सांन्य भवांणी जय जय कार ॥०॥

●

ओंकार रूप छुय शिव आकारो।
ज़गत ईशारो भं०यनय जय ॥
आनन्द स्वरूप छुख न्यराकारो,
प्रंज़ि मंज़ ॐ रूप कोंरुथ वोदय।
विघ्न न्यवारतम विघ्न हर्तारो ॥
ज़गत ईशारो भं०यनय जय ॥०॥
जेट्टि मन्ज़ च़्रय छुख गंगाधारो,

ह्यटि छुय शूभुवुन नीलुकंठुय।
ड़ैकि छुय त्रि नेंथुर च़न्द्रमु तारो ॥
जगत ईश्वरो भंव्यनय जय ॥०॥

सूर्मति सं‍न्यासु जटाधारो,
खोतुर्य किन्य आसुवुन्य वोमा छुय।
अथस क्यथ पम्पोश नोल्य शाद्गमारो ॥
ज़गत ईश्वरो भंव्यनय जय ॥०॥

भ्रष्बस खंसिथ छुख स्वारो,
मनु मंज़ुलिस जाय गुरु रूपु छुय।
हर मोखु आसुवुन छुख हर द्वारो ॥
जगत ईश्वरो भंव्यनय जय ॥०॥
अंनिस कासतम अन्धयकारो,
दासन कासतम संकल्पु खय।
सूहम् आहम् सु परु शंकरो ॥
ज़गत ईश्वरो भंव्यनय जय ॥०॥



रातस दोहस शिवु शिवु कर्यज़।
ज़िंदय मर्यज़े धन भागन॥

ईश्वर स्मरण मनि मंज़ सोर्यज़े,
तवु सांत्य भवसर नावि तारन।
भगवत नावुच स्मरण फिर्यज़॥
ज़िंदय मर्यज़े धन भागन॥०॥

पानु निशि ज़ांन्य हुन्द निशानु सोर्यज़
ज़ांन्यज़ कति भगवान आसन।
गुरस नीशान मन्त्र पर्यज़े॥
ज़िन्दय मर्यज़े धन भागन॥०॥

पापु निशि पोह कुल पनु पांठ्य हर्यज़े,
तिमय पाप पोन्य येन्द्र्य मिलुवन।
दंहन फल्यन रुच्छर कर्यज़॥
ज़िन्दय मर्यज़े धन भागन॥०॥

स्री नाम तोरग्य मांदानु फिर्यज़े,
रंटयज़्यन कात्ति निशि त्रांव्यज़्यस
रुयांन।

क्षण क्षण करन सांत्य बतिनो मंर्यज़े,
ज़िंदय मंर्यज़े धन भागन ॥०॥

सोम खेंज़ि सोमुयं चार नाल रट्यज़े,
ज़ान्यज़े सुय वाति बड़्यन भागन।
ज़िंदय आंसिथ पान मंशिर्यज़े॥
ज़िंदय मंर्यज़े धन भागन ॥०॥

ज्ञानुच फलहन मनु भूमि वंव्यज़े,
गुरु सुन्दि अलुबेलु गोड तल्यज्यन।
शेंशिकलु ज़लु सांतिन सगंयं ज़े॥
ज़िंदय मंर्यज़े धन भागन ॥०॥

व्यवहारकि द्राति सांत्य फल लून्यज़े,
दुयी गाल पानु निशि च़ुयहनहन।
पान गाल पानस यारज़ कंर्यज़े॥
ज़िंदय मंर्यज़े धन भागन ॥०॥

'शंकर' सुल हुय च़ुय वुन्य चीन्यज़े,

आनन्द स्वरूप प्राण ज़ान्यज़्यन।
प्राणुय मिलुविथ प्रत्यक ह्रण कर्यज़े॥
ज़िंदय मर्यज़े ध्यन भागन॥०॥



रम रम स्वरहथ श्री भगवानो।
गुर मोख ज़ानू नमस्कार॥

वुर च़ेय लोगथम जेशना पानो,
रंग रंग पांथुर चांनिथ च़ेय।
पानय वुछिवुन पान करानो॥
गुर मोख ज़ानू नमस्कार॥०॥
केंह छी रंगस मंज़ अच़ानो,
केंह रंग लंगिथ कड़िथ च़ेय।
केंह छी रंगर जाम रंगानो॥
गुर मोख ज़ानू नमस्कार॥०॥
केंह छी मूद्यमृत्य ज़िंद आसानो,

केंच़न मेरिथ ज़ुन चुतुथ चेंय।
केंह समसारस थिथ ज़ानानो॥
गुर मोख ज़ानू नमस्कार॥०॥

केंच़न रावान गुर छांड़ानो,
ज़न्म सोरुय मेल्यख न सुय।
केंच़न मिलविथ आंसिथ निशि ज़ानो॥
गुर मोख ज़ानू नमस्कार॥०॥

गुर छुय आंनिस गाश अनानो,
कासान अज्ञानुक गटु य।
नस छुख राथ दोह च़य बासानो॥
गुर मोख ज़ानूं नमस्कार॥०॥
खोचर चोंलुख पोरुतु सपनानो,
तिम यिम स्मरणि चानि कुनछी।
स्मरण चांनी न्यथ फिरानो॥
गुर मोख ज़ानू नमस्कार॥०॥
आनन्द समुद्र छुख बरानो,
मस खांस्य तिमन कित्य यिम
संत छी।

यस ध्युतुथ कुस आसि तस रटानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

कांत्याह येंमि वति आंस्य नेरानो,
यस दिख ह्यस रटि रज़ सुय।
रज़ आंस अंतिथुय क्रिसन् रटानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

रज़ गंयि प्राणच ह्रुयि सोंबरानो,
सोंबरिथ बुठन सुलि युगी।
वुठिथ रज़ि हनि छी लमानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

व्यचार् चि नावि क्यथ छी बेंहानो,
गुर् हुस हावान यारबलुय।
गुर् सुन्दि पयि सांत्य गाठ वातानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

कौकलि मो गछ ह्रुख रावानो,
स्व कालि गछ वात यारबलचुय।
गाठ येंलि प्रावख ह्रुख खसानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

युस आसि पोन्युक नाग सोंबरानो,
तस आसि फोल्वुन पम्पोशी।
वास् पम्पोशस आसि बुद्धानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

कैंह छी कपटी कुनान प्राणो,
केंचन परनुय छ्युतुथ ज़ेय।
तिम छी सत शास्त्र मन्दानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

कैंह छी परिथ मूर्ख सपनानो,
केंज़न परनय बरिथ खांस्य।
सनख रंस्य आंसिथ छी छिवानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

केंचन मोंछ्यथुय मंत्य गछानो,
मोछुन गव रोज़ुन बोद सोंस्तुय।
बुडी मोंछिथ छी छिवानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥

ईशर् लीला छुय करानो,
कव् ज़ानि शंकर शंकर तय।

शिव् शंकर् कर दया पानो॥
गुर् मोख् ज़ानू नमस्कार॥०॥



अंनीकु रंग् बसति ज़ामय।
मन् करू राम् रामय॥

खार ज़न कुस दमान, अंन्दरय दिह में शमान।
सूर गजि यैलि समान॥
मन् करू राम् रामय॥०॥

त्रोपुह्रा सारि दारे, वोथु हां पंत्यमि प्यारे।
ह्याव् मेलि तोत् हारे॥
मन् करू राम् रामय॥०॥

नेर्यो पत् पतय, वुछियो चानि वतय।
खहेम येमि सर् गोतय॥
मन् करू राम् रामय॥०॥

छुयि संसार असार, युन गछुन ज़ान बाज़ार।
दोह तार् सांर् शिकार॥
मन् कर॒ राम् रामय॥०॥

आंखुर छु घर् गछुन, थरि ज़न बर् गछुन।
रोज़खय पर॒ वछ़न॥
मनँ कर॒ राम् रामय॥०॥

नेर् हा सुलि मते, छ़ांड्हन वति बते।
वुछि जाय छुस कते॥
मन् कर॒ राम् रामय॥०॥

गोड् छ़ांड्हान गुरय, दियि हम ज़ीर सोरय।
बें स्वरस फेरि स्वरय॥
मन् कर॒ राम् रामय॥०॥

गुर गव गटि मंज़ गाश, वन् हा गछि माफ़ाश।
सुय गव स॒ प्रकाश॥
मन् कर॒ राम् रामय॥०॥

नादस यिन् गरय, वादस कुँहन् फरय।
लंजि निशि गुल हरय॥
मन् कर॒ राम् रामय॥०॥

प्राण गद्धि अद् नीरिथ, कस अच़ी अद् फीरिथ।
सांरी आंस्य तस सांत्य॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
समनस सांधि वांच़य, वद्नस अजि रांच़य।
अख ऑकिस करन् संच़य॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
बेंह नस अंद् अंदय, सज़् नस तन् तंड़य।
कासन मन् संन्दी॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
दीनस ज़ोर् ज़ीरय, युथ तस प्राण नेरी।
क्रख करन वोन् हेंरे॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
दीनस ड़ूल् ड़ालय, मारन वोख् क्ऱालय।
त्रावन अशि चालय॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
दीनस ज़ोर् क्रकय, युथ त्रावि तमि क्रकय।
प्राण दीनस दकय॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
दपनस ओंन त्रावन, ओंन क्याह गद्धि हावन॥

त्रिशाकाल देह सावन ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥
दपनस गछ़ पानस, क्याह छुख यथ थानस।
प्यतरुन छुय पानस ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥
दपन तिम जल्द गछि, मगन तिम वुछि वुछ।
द्यवु असि केंह मोछ़ ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥
करनस ज़ोरु कनन, वन क्याह गंयि वनन।
वनख ती छुख नु सनन ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥
क्याह ड़्यूँठुत बबस, वातख तथ गबस।
वोपाय क्याह लूसु तबस ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥
सनान दिनस वुशनि पोनी, बुछिनस ज़ीवदानी।
आसुनस सोनु दानय ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥
सनान दिथ कड़ुनसय, वंटिथ कपरु वलुनसय।
लदुनस पचि रसय ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥

दीनिस नख सांरी, कड़ुनस बाज़ांरी।
कस्यस नो कॉंह तियांरी॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥
नीनिस अंद मांदान, आसनस मोंड़्यलदान।
कांह नु तस गरि वदान॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥
यियि सु तोंत अखा, अथि ह्यथ ह्यथ मखा।
ज़ालि तस ति नार अखा॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥
कूँह दप्यस क्याह छु करान, कोन् छुख दार करान।
पत् वथ आयि मरान॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥
वोथि हेंयि गर् पकुन, खस् वुन हेंयि थकुन।
पंहरस युसन् टकुन॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥
त्रावन तस बेकस, ज़ालिथ मांदानस।
वंथित यिन चान्य पानस॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥
नातन गर् फीरिथ, दपनख वांच नीरिथ।
तोहि आसि ख्यनशीरिथ॥
मन्, करू राम् रामय॥०॥

पकी नो कूँह सांती, नरि ज़ंग प्राण सांती।
यिथय पांठ्य गंयि कांती॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
वंल्य मुत्य मोह् माये, संसारस आये।
ज़ॉन्य निशि छायि छांये॥
मंन् करू राम् रामय॥०॥
राव मो छेनुनय, पेबात आस पनय।
संसार् कल ह्यसनय॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
वुछनय अख अंकिस कुन, छुस् कनि किन्यछ्य छ्यथ्न।
मायायि दीनस च्चन॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
अपज़िस छि मेलानय, माया छुख वलानय।
बुध छुख ड़लानय॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
मोह छुख क्रोंठु कने, सनतान अख वने।
सुति गलि चेयि नवानय॥
मन् करू राम् रामय॥०॥
मायायि फंल्य वटन, अख अंकिस निशि खटन।
पनुन्य ज़ान पान वटन॥
मन् करन राम् रांमय॥०॥

करन युद्ध पान् वांनी, बंय निम् दांन्य दांनी।
अंज़रन दोंद् त् पोनी॥
मन् करु राम् रामय॥०॥
रुदुख न् केंह च्यतस, मायायि हुंज़ यद्धतस।
मन् वोन्य वोन्य दिनस॥
मन् करु राम् रामय॥०॥
कोंह छुय न् येति न्युनुय, अत् गथ छुय छोनुय।
काल् क्रेंचि चरख ह्युनुय॥
मन् करु राम् रामय॥०॥
याद रुदुख न् मरुन, ह्योतुख व्यवहार करुन
ह्योतुख संसार सरुन॥
मन् करु राम् रामय॥०॥
ग़ाफिलो गछ् बेदार, केंह म् ज़ान मोहर तय
कंन्ड्‌य जाल मोह संसार॥ थ्यार।
मन् करु राम् रामय॥०॥
अद् केंह बनी नो, कुँह केंह बनी नो।
व्यचार रोंस सनीनो॥
मन् करु राम् रामय॥०॥
सुलि चेन गारुन हो, गुरस पत् लारुन हो।

अज्ञान ज़ालुन हो ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥

अज्ञान छुय अन्यर, वनुहा गछि नन्यर।
त्राव मोंटराव तन्यर ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥

मोंटरुन सतु कुय ध्यान, गुरस सांत्य करशोद्ध ज़ान।
ज़ान सार छुय आसान ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥

मूल छुय गुर रटुन, ह्वांडिथ सुय वटुन।
सुय हेंयि ठेंर्य ज़टुन ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥

मनु किन्य आस दोरे; 'शंकर' च़ठतु थरे।
ठेंर्य छी वालु बॅरे ॥
मनु करू रामु रामय ॥०॥



ज़ोनुम नु समुदरस गछि वोन्य सुमय।
में गछि़ रुम् रुमय सू॥

द्रायस नेरवुन चारिनम वुमय,
कोनो ग़ांफ़िलो च़ेनान छू।
असार संसार कव रोटमुतुय॥
में गछि़ रुम् रुमय सू ॥०॥
मोह गेर अज्ञान् काठ सोंवुरमय,
दम् दम् कोंरमस सू सू सू।
गुर् सन्ज़ि त्यम्बरे सुयज़ोलुमय॥
में गछि़ रुम् रुमय सू ॥०॥
ज़न्मस यिथन कूह रोवुमय,
बाल् पान सोख्यव प्रज़नुमन् सुय।
नफ़सय हेंतिस लूम खोरुमय॥
में गछि़ रुम् रुमय सू ॥०॥
दम् दम् कास् विथ चेरनम दुमय,

कोनो सपनुम यार ज़ांह सू ।
याराह दोर ओस कोन् छ़ांड़ुमय ॥
में गछ़ि रुम् रुमयसु ॥०॥

छ़ांड़ान क्यथ् वलि पीड़ आंसुमय,
नम छ़ेंनिख छ़ांड़ान लोंबुखन् सू ।
- यस ध्युतुन पानय सुय वोतुमय ॥
में गछ़ि रुम् रुमय सू ॥०॥

खसुवुनि पानय कोन् च्यूनुमय,
संसार सोरुय अंथुर छू ।
गुरु सुन्दि मन्त्र् वोन्य च्यूनुमय ॥
में गछ़ि रुम् रुमय सू ॥०॥

ग़ांफिल कव् गोस निशि आसुमय,
निशि आंसिथ दूर छ़ोंडुम सू ।
गंड़ आस संसार कोन् चोंटुमय ॥
में गछ़ि रुम् रुमय सू ॥०॥

अस्थिर संसार सार छ़्यूंठुमय,

कव, पकु पुरुषस अहम् छु।
तंम्य लोंब सोरुय येंम्य च़्यूनुमय॥
में गछि रुम, रुमय सू॥०॥
गव लयि बदल ॰यच्वार कोंरमय,
संतोष संतान ज़ोनुम छु।
ट्रंवि हन्ज़ि दायि रछुन ह्युतमय॥
में रुम, रुमय गोंछुम सू॥०॥
तरू त्रेंयि प्रकोंयि तीज़ोनुमय,
सुले कोंड़नख प्रकार छु।
दोंयुम गुर, सुन्द बंयि ड़्यूंठुमय॥
में रुम, रुमय गोंछुम सू॥०॥
सिर, सान त्रेयुम लमन ड़्यूंठुमय,
येंम्य लोंम होग, रज़ि वोतुय सु।
पानस अंचिथ सर, कोंरूमय॥
में रुम, रुमय गोंछुम सू॥०॥
मस दिथ शंकरस ह्यस न्यूनमय,
संसारुक ह्यस नंन्य जान छु।
नत, द्राव सोरुय यस ह्यस हुम्य॥
में रुम, रुमय गोंछुम सू॥०॥

सिखिम परम् पद गछि छांड्नुय।
सुय रूफ हेंज़ि धारनुये ॥
सुय रूफ भगवान आदि छुय कुनुय,
सुय रूफ सिखिम् सोत् तोनूये।
सुय रूफ पान् निश्चि शोल् दिवुवोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारनुये ॥०॥
संसार् समन्दर मोंदुर लग्वोनुय,
छुय नो थ्यर आसुवोनूये।
सर् कंरिथ न् ज़ाँह योहय भ्रम ज़ोनुय॥
सुय रूफ़ हेंज़ि धारोनुये ॥०॥
समन्दरस बातखन् छुय स्यठा सोंनुय,
येंति तरहस्त यीर्वोनुये।
तव् पढ़ि गुर् सुन्द अथ् रटोनुय॥
सुय रूफ़ हेंज़ि धारोनुये ॥०॥
गोड् ह्यनतन् सान गुर छांडोनुय,
गुर असि अथ् रट् वोनुये।

तसुन्दुय अथ, रठ वातख कूनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनूये॥०॥
गुर, सुन्ज़ सीवा आस करवोनुय,
तमि सात्य आसख फोलुवोनूये।
संसार, मोहस नु, बन्द गछ़ोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनूये॥०॥
गुर, सुन्ज़ सीवा प्रत्यक्ष ज़ानुवोनुय,
ॱयांज़न नाश कर, वोनूये।
तम्युक अन्तर हेंयि प्रखटोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनुये॥०॥
गुर, सुन्ज़ि सीवायि ह्यख नेरोनुय,
पापुनि वारि निच्चि छोनूये।
गुर, सुन्द लोल हुय पाप कासवोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनुये॥०॥
गुरस निशन हेंज़ि वोज़ोनुय,
तथ प्यठ व्यमर्श करवोनुये।

वांरागु मोहस छुय च़टुवोनुय ॥
सुय रूफ हैंज़ि घारोनूये ॥०॥
व्यच़ारु नारय अंस्य ज़ालु वोनुय,
अज्ञानु ज़ाल पनोनुये ।
अहम् शस्त्र ज़ालिथ फुटरोनुय ॥
सुय रूफ़ हैंज़ि घारोनूये ॥०॥
च़ञ्चल समदस आसि खसुवोनुय,
व्यच़ारुच लाकम फिरुवोनुये ।
मंज़ वति अदु नो ह्युरव ड़लोनुय ॥
सुय रूफ़ हैंज़ि घारोनुये ॥०॥
कामस ति व्यच़ार क्रोंठु च़टुवोनुय,
तमि सांत्य आसि पोठवोनुये।
काम येलि शमी ह्युरव नो वनोनुय॥
सुय रूफ़ हैंज़ि घारोनुये ॥०॥
काम छुय बंड़ ज़ाग च़ूरि लारुवोनुय,
काम छुय तपु वालुवोनुये ।

गोड़, काम पान, निशि असि च़टवोनुय,
सुय रूफ़ हेंज़ि धारोनुये ॥०॥

काम तप, क्रूध्युय हेयि नेरोनुय,
क्षमा करन, सांत्य गालवोनुये।

क्षमा क्रूधस छुय मंड़वोनुय ॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनुये ॥०॥

अहंकारस दया करवोनुय,
दयायि दम, अहम् शमरोनुये।

दया पुरुषस अहम् न, पोरवोनुय ॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनुये ॥०॥

लूभ छुय दोसन च़ूरि खारवोनुय,
दोसि प्यठ दब लगवोनुये।

येम्य ज़ीन्य यिम पांछ़ सुयबनवोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनुये ॥०॥

गुरु पद बूज़िथ आसि धारवोनुय,
धारणादि साधन कुनूये।

धारणा येम्य धांर सुय वाति कूनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनूये ॥०॥
धारणा ध्यान छुय आनन्द दिवोनुय,
आनन्द अंस्य छांड़ुवोनूये।
आनन्द रंट्यथ्य दुःख त्रावुवोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनूये ॥०॥
गुरु पद सिखिम ज़ान स्यठा नोंनूये,
कर्मु सादुनुय मंठरावोनूये।
युथ सुलि आसख न्यथ लमुवोनुय॥
सुय रूफ हेंज़ि धारोनूये ॥०॥
पाँच़न प्राणन म्युल करुवोनुय,
पाँच़न मौच़ान कूनूये।
कुनिस सांतिन ज़ान गछ़ोनुय॥
सुय रूफ़ गछ़ि धारोनूये ॥०॥
शिव छुय प्रत्यक्ष पूरु आसुवोनुय,
कोहं ठंर्य सुय कासुवोनूये।

ध्यव् ठंर्य चटि तय हैंयि प्रखटोनुय ॥
सुय रूफ़ हेंज़ि च्यारोनूये ॥०॥

शम् दम् आब्यास असि वुहवोनुय,
गछ़ि शेंश्तरस सोनूये ।
सौन येंलि गछ़ी मुक्त ज़ानोनुय ॥
सुय रूफ हेंज़ि च्यारोनूये ॥०॥

गुन्यान् वती गछ़ि पकोनुय,
अगुन्यान सार ज़ानोनूये ।
अनुग्रह किन्य जल्द छुय वातवोनुय ॥
सुय रूफ हेंज़ि च्यारोनूये ॥०॥

ओरुक अनुग्रह बोंड़ ज़ानोनुय,
तति केंह छुन् परछ़ोनूये ।
शंकरस' अनुग्रह आस कर्खोनुय ॥
सुय रूफ़ हेंज़ि च्यारोनूये ॥०॥

गुरु मोख्‌ रट्‌हथ शाम्‌ सोन्दरो।
गुरु ईशारो दया कर॥

गुरु मोख्‌ कासतम गट्‌ गाशरो,
बासतम गुरु पदुक अन्तर।
अंन्दर्‌ गाह तव्‌ सांत्य केंह सर्‌ करो॥
गुरु ईशारो दया कर॥०॥

यैलि ज़ास वोंलनस मोहं अन्धकारो,
ज़ोनुम नु सोंन ह्युम समसार्‌ सर।
तैंलि चेन्यम नत्‌ ओन क्याह करो॥
गुरु ईशारो दया कर॥०॥

चेतन प्यपास गोम नु केंह सरो,
व्यचरुम क्वोज़ किन्य वोराग्‌ वर।
ज़ेरि ज़ेरि पनुनी क्रास न्यबरो॥
गुरु ईशारो दया कर॥०॥

कुछुम संसार सोरुय अस्थिरो,

कव़ गोस ब़ोड़िथ तथ अंदरो ।
मोकल़ तमि किन्य च़ुय दयाकरो ॥
गुऱ ईशारो दया कर ॥०॥
नावाह गोव असि पाप़ गोढ्यरो,
पानस दोंपुम वोन्य म़ पाप कर ।
निशि छुय सोरुय थव ख़बरो ॥
गुऱ ईशारो दया कर ॥०॥
प्योस येंलि चेतन द्रायास गरो,
बुद्धि हा तसुन्दुय वोंड़ अन्तर ।
फेर्यास सांयिस्‌ुय गाम़ शाहरो ॥
गुऱ ईशारो दया कर ॥०॥
वोंन दिनि फ़ेर्‌यास बस चेंयहरो,
ध्यव़ आसि कुनि बिह्हि त्रावहालर ।
थंकिथ फीरिथ आस च़ास गरो ॥
गुऱ ईशारो दया कर ॥०॥
बोंज़ निशि ज़ोनुम क़ॉड़ुहनकोरो,

ह्यम सुय पद कासुम अन्तर,
छांड़िथ रोटुम ज़नार्दन गुरो ॥
गुर ईशारो दयाकर ॥०॥

ज़नार्दिन पानय छुय ईशारो,
गुर छुय कासान खय गचर ।
गुर छुय आसवुन वति राहबरो ॥
गुर ईशारो दया कर ॥०॥

पांच़न गुर पयि गव बराबरो,
रुदुखनं ह्यस केंह गंयि बेस्वर ।
राज गंयि ग़ाफ़िल मुचुरनम बरो ॥
गुर ईशारो दया कर ॥०॥

पांच़न मिलुवन दोप तम्य करो,
पांछ गंयि प्राण तथ सात्य लयकर ।
सोंबरख तिम पांछ गुर पद स्वरो ॥
गुरईशारो दया कर ॥०॥

गुर पद परनु सात्य शाह व्यसरो,

तिम शाह हावनय बोंड़ बाज़र ।
बोंड़ छुय बाज़र मोह गचरो ॥
गुरु ईशरो दया कर ॥०॥
रात ज़ान अज्ञानुक गचरो,
दोह छुय ग्यन्यानुक अन्तर ।
पानु छुख बोंज़वान वोंन्य सरु करो ॥
गुरु ईशरो दया कर ॥०॥
पानु ज़ान गंछ़िथ अगन्यानु अन्तरो,
किनु गंछ़िथ ग्यन्यानुक गाशि बर ।
तमि बरु अंच़यज़्यस कलायि अंदरो ॥
गुरु ईशरो दया कर ॥०॥
कलाय छय बुज़ुंच तथ छिनु बरो,
ज़ंटिथ त्रेंप्यज़्यस दारि तु बर ।
दमु दमु रंटिथ त्रां॰यज़्यन नुन्यबरो ॥
गुरु ईशरो दया कर ॥०॥
मस वालु हांस रटुन कुय होनरो,

युथन् ज़ाँह गछी अथ बेखबर,
दुर रटुन विंर्द् सांत्य बाखबरो ॥
गुर् ईशारो दया कर ॥०॥

दूर मो गछ् ह्यो निशि खबरो,
ज़ाल छी वलान छांडुन दूयर।
दुयी येंलि गलि त् मजरफीबरो ॥
गुर् ईशारो दया कर ॥०॥

अमि निशि गंछिथ ऊँगार् थरो,
ऊँगार् थोंद् केंह छांडुन् बेहतर।
ऊँगार् किन्य प्राव बोंड् थज़रो ॥
गुर् ईशारो दया कर ॥०॥

ईशार् स्मरणन्यथ मन् स्वरो,
ज़ान कोर् ब्यांलिस खसीतर।
तर ज़ान नेरन केंह करन असरो ॥
गुर् ईशारो दया कर ॥०॥

दपान ईशार् शिव् शंकरो,
'शंकरस' ज़ांन्य हुन्द कुलज़ुम बर।

ज़ान कर गुरस मुच़रनय बरो ॥
गुर ईशारो दया कर ॥०॥



गुर पद मन स्वरय ।
करयो हर हरय ॥
स्व मन गछि नेरनुय, सांरिस गछि द्युनवोंनुय ।
छांड़िथ गुर कड़ुनुय ॥
करयो हर हरय ॥०॥
मूड़ो पत स्वरन, संसार कुल छुय सन ।
नाव पकनाव पनुन्य ॥
करयो हर हरय ॥०॥
गुर पद छुय दरय, च़ीनि यिम स्वरय ।
सुय पद मन तरय ॥
करयो हर हरय ॥०॥
गुर यस सथ पेंये, चाऽयस आनन्द मये ।
रोज़्यस अद सुये ॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्युय सार प्रकाश, सुय ह्युय थावान आश।
हावान ह्युय परम् प्रकाश॥
करुयो हर् हरय ॥०॥

गुर ह्युय पानु सुये, तंम्य वोंनुय सूं सुये।
सुय पर् मेलि सुये॥
करुयो हर् हरय ॥०॥

गुर ह्युय वथ हावान, स्वरु सान पकुनावान।
आनन्दु मय चावान॥
करुयो हर् हरय ॥०॥

गुर ह्युय सांत्य वते, तारान येंति तते।
रठतन सु मूढ़् मते॥
करुयो हर् हरय ॥०॥

गुर ह्युय अथु रटान, तमि सांत्य तोंत ह्विवातान।
अगुन्यानु निशि ऱटान॥
करुयो हर् हरय ॥०॥

गुर ह्युय पानु भगवान, सुय प्राणु थलि सगुवान।

सुय छुय शिव दयावान॥
करयो हर हरय ॥०॥
गुर छुय ह्योर खारान, बुजिस प्यठ दुकान।
बुजिस हेरि छुय ध्यान॥
करयो हर हरय ॥०॥
बुजि सव ब्रह्मांडय, वति छुय काठिनुतु कांड़य।
कासान सोय छुं मोहुं ज़ांड़य॥
करयो हर हरय ॥०॥
गुर छुय वतु गाशी, गचर चलि छुय नु नाशी।
सपनख अविनाशय॥
करयो हर हरय ॥०॥
गुर छुय शिव पानय, ज़ान करु अज़ानय।
तमि पयि ह्योर खसानय॥
करयो हर हरय ॥०॥
गुर छुय फोलुवुनुय, भगवान ज़ानुनुय।
तमि छुख बोलवुनुय॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्वुय गट् कासान, तमि पयि शिवकासान।
नतु सुय शिवआसान॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्वुय सिर्ययि प्रत्यक्ष, रटुन सय दार मो थक।
तस निशि ज़ान गछ़ख॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्वुय कासवुनुय, अन्तर अज्ञान मनय।
रोज़ तमि निशि छ़्यनय॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्वुय आनन्दय, भजन मनु गोविंदय।
रोज़ी नु अद छ़्यनय॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्वुय प्रत्यक्ष शिवय, गुर पद सांत्य नवय।
तीज़ वान ह्वुख रोयें॥
करयो हर हरय ॥०॥

गुर ह्वुय पानुआसान, यव दोंयुत ह्वुयकासान।

तसुन्दुय पय छु बासान॥
करुयो हरु हरय ॥०॥

आस चेतन प्यवान, रात्र वंन्य वंन्य दिवान।
अंन्दरु आगनु मर सीवान॥
करुयो हरु हरय ॥०॥

सीवनु यियि शमनु सांती, रुमु रुमु छमनुसांती।
अहमु निशि शमनुसांती॥
करुयो हरु हरय ॥०॥

न्यरमाया गछ़ आसन, दीयतु निशान कासन।
यूगु सांत्य पोश फौलन॥
करुयो हरु हरय ॥०॥

हुसन गव पोश पम्पोश, अंदंरिमि यूगु दिस जोश।
फौली अदु अष्टु दलु पोश॥
करुयो हरु हरय ॥०॥

गुरु संदि दृष्टि तलय, अगन्यानु ज़ालु छलय।
सुय वसुम अंगन मलय॥
करुयो हरु हरय ॥०॥

रात्रि द्यन गूर् गूर्य, मन् स्वर् ध्यानस्वरय।
ज़ानस ज़ान करय॥
करयो हर् हरय॥०॥

मूढ़् मन् करू सरय, किन् लगि दोह दुरय।
अद् केंह गछ़िन् सरय॥
करयो हर् हरय॥०॥

ज़िंदु गछ़ि पान मारुन, गुर् पदुक ध्यान धारुन।
गुरस पत् पत् लारुन॥
करयो हर् हरय॥०॥

केंह छ़ुय न् लारुनुय, गछ़ख येंमि सर् छ़ुयनय।
गुर् पद् सांत्य ननी॥
करयो हर् हरय॥०॥

गुर् छ़ुस ज़ार वनान, छ़ुम लोल मनि गनान।
तव् योंद आसि सनान॥
करयो हर् हरय॥०॥

गुर छ़ुस मंगवुनुय, सू पद दिम छ़ुकुनुय।

तमि आशि बोलवुनुय॥
कर यो हर हरय॥०॥
'ज़नार्दन' छुय पानय, अगुन्यान कासानय।
ती छुम बासानय॥
कर यो हर हरय॥०॥
'ज़नार्दन! कर मैं दया, अमरच्यतुगनु मया।
"शंकरस" चान्य दया॥
कर यो हर हरय॥०॥



सुलि चेन पूज़ कर भगवानुसय।
कर सीव कृष्णु जुवसुय॥०॥
भगवान आसुवुन मंज़ मनुसुय,
ज़ांनिथ कोनु छुख केंह चेनान।
सत पदु पुछ़ि गछ़ निशि गुरसय॥
कर सीवु कृष्णु जुवसुय॥०॥
प्रभातु शरण गछ़ भगवानुसुय,
कोनु छुख कामि स्यद तस मेंगान।
सारि कुय आधिकार आसुवुन तसुय॥
कर सीवु कृष्णु जुवसुय॥०॥

परम् पद बूज़िथ सत समन्दरस्य,
कोन् छुख तथ मंज़ छ़ांठ वायान।
परम् पद येंम्य ज़ोन तार लोंग तस्य॥
कर सीव् कृष्ण जुवस्य॥०॥
सीव करि माजि, मांलिस गुरस्य,
सुय आसि ज़न्मस मंज़ भाग्यवान।
यस आसि सू पद गुर मेलि तस्य॥
कर सीव् कृष्ण जुवस्य॥०॥
यस आसि संसार लूभ छुय तस्य,
लूभ् सांत्य मायायि वलन् यिवान।
सू ज़ि गोमुत बन्द मोह ज़ाल्स्य॥
कर सीव् कृष्ण जुवस्य॥०॥
ज़ान कर ज़ांन्य सांत्य पांन्य पानस्य,
तमि सांत्य आंम्य गंड छी मोकलान।
युस न् गव चेतन मोकलन छु तस्य॥
कर सीव् कृष्ण जुवस्य॥०॥

पूज़ि लाग पम्पोश वेंचि तुलसिये,
मनि मंज़ पोरषस करिथ ज़ान।
सत्‌के सागर् गोंड़ छ्यूतसे ॥
कर सीव् कृष्ण् ज़ुव् स्‌य ॥०॥

येंम्‌य मिलुव ज़ीवआत्म परम् आत्मस्‌य,
तस छी ज़न्मुकय गुल फोलान।
शिव् शिव् करिथ मेल्‌हां तस्‌य ॥
कर सीव् कृष्ण् ज़ुव् स्‌य ॥०॥

म्युल कर पदस गुर् शब्दस्‌य,
आनन्द् फल तथ छुय नेरान।
युस ववि मनि मंज़ क्योल खसि तस्‌य ॥
कर सीव् कृष्ण् ज़ुव् स्‌य ॥०॥

काम क्रूध त्रांविथ छान रातस्‌य;
सथ असथ वंन्यज़िथ व्यचार करान।
बूज़ख आमुत छुस ज़न्मस्‌य ॥
कर सीव् कृष्ण् ज़ुव् स्‌य ॥०॥

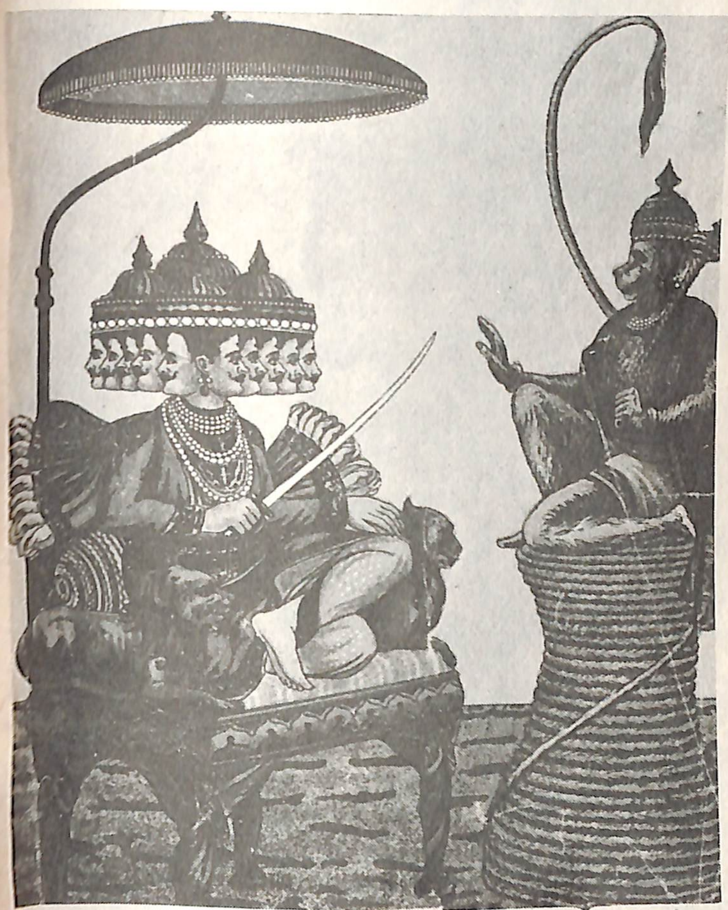
क्षण्‌ क्षण्‌ शरण गछ्‌ भगवानस्‌य,
दया करतम दयावान ।
दम्‌ दम्‌ खस हौर ब्रह्मांड्‌स्‌य ॥
कर सीव्‌ कृष्ण्‌ जुव्‌स्‌य ॥०॥
व्यवहार लग्‌हा कृष्ण्‌ नावस्‌य,
सुय कुम पृथ्वी ज़ांड़ कासान ।
खय में ति कासतम मन्‌ आंयीनस्‌य ॥
कर सीव्‌ कृष्ण्‌ जुव्‌स्‌य ॥०॥
निशि आस हरकाँह ध्यान थौव तस्‌य,
तसुन्दुय ध्यान दारनायि धारान ।
ज़ान कर ज़ांनिस ज़ान छुय तस्‌य ॥
कर सीव्‌ कृष्ण्‌ जुव्‌स्‌य ॥०॥
वति हुन्द पय छ्‌यथ न्यथ गुर्‌स्‌य,
मनुक परपोश्‌ कि हो आसान ।
अद्‌ छुय फेरुन अष्ट दल्‌स्‌य ॥
कर सीव्‌ कृष्ण्‌ जुव्‌स्‌य ॥०॥

लग बोन् पम्पोश ह्यो खारनस्य,
यव् छुय बोन कुन कल् फेरान।
यस छुय मूख़् भाव बोन कन तस्य॥
कर सीव् कृष्ण् जुव्स्य॥०॥

युस तव् सर् खसि नाद् बिन्दस्य,
तस छुय न्यथ आनन्द वोप् ज़ान।
शषकल पत् ब्रोंठ फेरान तस्य॥
कर सीव् कृष्ण् जुव्स्य॥०॥

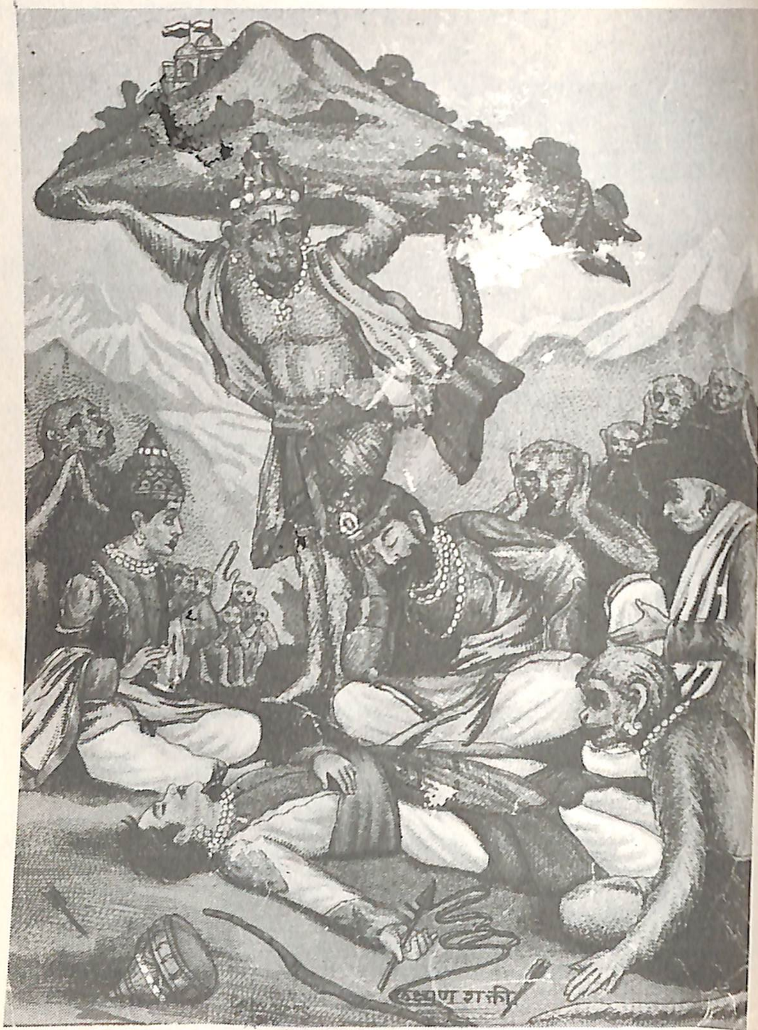
लय कर अंक्यस्य गुर् शब्दस्य,
स् ज़ि छुय कुनुय शेंन गालान।
पांछन् ग्यछ़ुर कर कुनी रसय॥
कर सीव् कृष्ण् जुवस्य॥०॥

युस मिलवि पांछन मील्य तिम तस्य,
सुय सूहम् सू छुय खपनान।
पान् निशि गंछ़िथ ज़ान गयि तस्य॥
कर सीव् कृष्ण् जुव्स्य॥०॥



चित्र पत्र

अगद शिष्टाई   जमन बनावट



चित्र पत्र १०

युस परि प्रभातु यथ अमरथतस्य,
दौंखी शरीर तस आसिनु आसान।
युस परि सायमु कामि स्थद तस्य॥
कर सीवु कृष्णु जुवस्य॥०॥

युस परि चोरि लटि राथ दोहस्य,
दर्शुन तस दिथि पानु भगवान।
गछि मुक्यगछि सुय विष्णु भवनस्य॥
कर सीवु कृष्णु जुवस्य॥०॥

अज्ञानु अंधुर कास 'शंकरस्य'
सुजि छुय 'शंकर' चेंय छांडान।
मेंति मिलनावतम शिव शंकरस्य॥
कर सीवु कृष्णु जुवस्य॥०॥



गुर मोख सोन्दरो।
करयो गूर गूरो ॥
येंलि ज़ायासमाजे, दिच्छनम दौद पांजे।
सीव कंर में बूजे ॥
करयो गूर गूरो॥०॥
कंरमन बंड़िथ कथ, छांड़ुम पॉण्यौवथ।
लुजरस छस ह्यकथ॥
करयो गूर गूरो॥०॥
गर्भु कष्ट रूदुय नो, श्रवण मंज़ ज़ॉह पेंयीनो।
अंछन बसतन छुय नो॥
करयो गूर गूरो॥०॥
रूदुम न चेतन मंज़, बड़नस कोंर में संज़।
खंरिम तिम अंछन मंज़॥
करयो गूर गूरो॥०॥
बंड़िथ खंच़ में थुरय, कोंरहमनेथुरय।

वछ़स ज़ालु चे़रे ॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

वछ़स ज़ुवचि ज़ालय, तमि भयि पान गालय।
होश ज़ाम दिच़मु ड़ालय॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

कौंरुम परमु आसन, तमि सांत्य ठोंरकासन।
मेलि ह्यस शिलु वासन॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

च़ायस कूठरे, लमु नस केंह मेंब़ेर।
पोश फ़ोंलिम पोशिथेंर॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

सग दिमस हेंर्यमि कले,
तमि सांत्य पोश फोले।
अदु नो ज़ांह गले॥
करुयो गूरु गूरे॥०॥

दोह पॉंशि महारेनिये,
छैनिथ दिह्यख चनेय।
दोंर छुय दीव छुय छोंनुय॥
करयो गूर गूरो ॥०॥
होशि छुख त होशि सान आस,
ज़ाम अनीक मयि निशि कास।
निशि छुय त दूर मो आस॥
करयो गूर गूरो ॥०॥
माम मयि कास निशि आस,
आहम् ममतायि निशि म आस।
सुज़ि छुय निशि मंज़ वास॥
करयो गूर गूरो ॥०॥
वोंनुय गव रोंदुर सोरुय,
येंम्य लंदिथ रेख्त खोरुय।
पावि पावि मिलनावे॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

मांज बोड्ठ रछिवुनी,
ज़ेन्य करान मूल तंनी।
मेलु वनतु दिच़ गंनी॥
करुयो गूरु गूरो॥०॥

वंथित च़ास वाव अन्दर,
कम कम द्राय गन्दर।
श्रेंप्य बेंयि मेंछ़ि अन्दर॥
करुयो गूरु गूरो॥०॥

मेंछ़ि बेंयि मेंछ़ि मेंछ़े,
हेंरि बोनु आसि मेंछ़ुय।
मोछि मंज़ सार मेंछ़ुय॥
करुयो गूरु गूरो॥०॥

यिम मंठराव पवन,
कुन वुछहन त्रिभवन।
कुल नतु छुय सुनवन॥
करुयो गूरु गूरो॥०॥

संसार ज़ाल छु खंटिथ,
गिलुविन कोत्य रंटिथ।
येम्य च्यून द्राव चंटिथ॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

वुछतन पानु क्रालुय,
कॉँह पूठ कॉँह छु स्वालुय।
कॉँह रबि तल छुलालुय॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

मूढ़ो प्यतु पायस,
संसारस आयस।
कवु पुढ़ि लजिनायस॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥
निशि छुय दूर मो लार,
क्याह वुछन कोचि बाज़ार।
सोंतु पिहकतु लबखतार॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

नाव करू भावूची,
व्यखारूच तू लोलूची।
लमन वोल हनतू पची॥
करयो गूर गूरो॥०॥

सुय आसि लमवुनुय,
तरुवुन तारुवुनुय।
अदु वातख च़ कुनुय॥
करयो गूर गूरो॥०॥

गुर छुय लाल अंछन मंज़,
गाशा छु तस आसी ठन्ज़।
रटुन रोज़ीनु दयी मंज़॥
करयो गूर गूरो॥०॥

युस वाती अथ स्वरस,
गोड़ु यथ स्वनि तु स्वरूयस।
वाति मंज़ सागरस॥
करयो गूर गूरो॥०॥

ओस तमि मज़् द्रामुत,
सोंदर् मंज़् यीर्य्योमुत।
मांल् यि तति गोमुत॥
कर्यो गूर् गूरो ॥०॥

आश गाश सू प्रकाश,
निशि छुस परम् प्रकाश।
नकुश प्रज़्नन छुनकाश॥
कर्यो गूर् गूरो ॥०॥

तिम अद् पान गन्डुन,
निशि पानस छ़ंडुन।
पान पनुन गोड़् मंडुन॥
कर्यो गूर् गूरो ॥०॥

ज़्यूठ छुय समसार्य,
कूठ छुय मोहं नार्य।
अमि नार् दिम च़् तार्य॥
कर्यो गूर् गूरो ॥०॥

ब्योल ववुन सोंदरस मंज़,
चाव गुर पयि तथ मंज़।
..............................॥
करुयो गूर गूरो ॥ ०॥

कव छुख वति रावान,
संसार तंन्तावान।
लोर छुयन छुख हावान॥
करुयो गूर गूरो ॥०॥

कांत्य मुह्य अंम्य मोहन,
चूरि चूरि छुख मूहन।
अगुन्यान छुख गूहन॥
करुयो गूर गूरो ॥०॥

येंम्य कोंड़ केंह छ्कारिथ,
ज़िन्द पान गोंड़ मांरिथ।
सार रोंटुख व्यचांरिथ॥
करुयो गूर गूरो ॥०॥

गुन्यानुक गाश खोंटुख,
अन्तर अगुन्यान रोंटुख।
पनुन यावुन छ्योंतुख॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

गुरु पद कुयि सारय,
तति कर व्यचारय।
व्यचारु किन्य लंब्यज़ि तारय॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

युस द्राव अमि वते,
अहमु निशि गोडु सोते।
ही फोंल्यस वति वते॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

गुर भक्ति आसुनुय,
र्सियियि यादु कासुवुनुय।
रुमु रुमु बासुवुनुय॥
करुयो गूरु गूरो ॥०॥

सीव कर खावुन्दसुय,
च्यव् रोज़्यस बोन्दसुय।
मिलवी दोद कन्दसुय॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

दोद छुय पान मेंदिथ,
क़न्द दिहि गालि पेंडिथ।
चेंयि अमरुथ वेंदिथ॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

अंन्दर् गोड् न्यतर तय,
खंटिथ मत् तरतय।
अंछ्व मंज़् सज़तय॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

बोम्बूर छुय क़ाल् दिवान,
खंटिथ छुय ड़ाल् निवान।
प्राण रंटिथ अथि चिवान॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

लौंदमुत मैंछ़ि बौंनाह,
यिम ज़ेन छुय सौंतूनाह।
पतव गछ़ि दिह फ़नाह॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

करन सांत्य तरनस सन्ज़,
करयो गूर गूरो ॥०॥

शिव छुय थलि थले,
सुय ज़ानि यसछि कलय।
सग दियी प्राण थलय॥
करयो गूर गूरो ॥०॥

●



ॐ श्री गणेशाय नमः



ॐ शुकलम् गणेश जी बाल चन्द्र को नमस्कार हो!

हे मूषकवाहन लम्बोधर! आपका गजमुखी मस्तक सोम आकार का है। आपके शीश का मुकट आपका कर शोभादायक है। हे बाल चन्द्र मैं आपको प्रणाम करता हूं।

शुभफल तथा वर देने वाले हे गणेश्वर आप विघ्नहर्ता तथा ‥ गाकार हैं। आप सिद्धी दाता हैं, सिद्धी के ईश्वर ‥ । हे बाल चंद्र आपको प्रणाम हो।

आपकी चार भुजाएं तथा एक सूंढ़ हैं। आपके तीन नेत्र हैं, जिनमें एक चंद्रमा सा तेजस्वी है। वलभा आपके संग है। हे गणेश्व र! हे बालचंद्र! आपको प्रणाम करता हूं। आपकी सवारी दो मूषिकों

पर है। आपही भक्तों के विघ्न हर्ता हैं। हे शंकर! जिसके चहरे पर तीन नेत्र हैं। हे! बाल चंद्र मैं आपको प्रणाम करता हूं।

●

हे शिवशंकर! हे हरी हर!
हे ईश्वर तू ही दया करना!

हे सुन्दर आनन्द गण! आपही विघ्न हर्ता हैं। आपही मुझे शुभ फल तथा शुभ वर्दान देना। हे अजेश्वर मैं आपही के शरण आया हूं। हे ईश्वर तू ही दया करना।

हे हरी हर! मेरे मायारूपी काँटो के बने फंदे को काट डालें। मेरे में ज्ञान भरदे तथा मेरे लिए ज्ञान के द्वार खोल दें। उसी से मैं इस संसार सागर से पार हो पाओं। हे ईश्वर तू ही दया करना।

समय पर मैं समझ न पाया। यही बड़ी भूल हो गई। मैं इस संसार

सागर का रहस्य न जान सका। अब आप ही बतादें मैं इस सरोवर को कैसे पार कर सकूंगा। हे ईश्वर तू ही दया करना।

हे गुरु रूपी प्रकाश के स्वामी! मेरे अन्धकार का नाश करले और कहदे हे "शंकर" तू इस प्रकार पार होजा। इस के विना मेरा और कोई रास्ता नहीं है। हे मेरे ईश्वर तू ही दया करना।

●

हे आनन्देश्वर! हे शक्ति के आकार! मैं आपको डंड़वत प्रणाम करने का इच्छुक हूँ।

इस संसार की प्रजा में आपही परमेश्वर के रूप में व्यापक हैं। इस जगत में आप सर्वाधिकारी हैं! हे गंगाधर में आपकी स्तुति का अभिलाशी, आपको डंडवत प्रणाम करने का इच्छुक हूँ।

हे जटाधारी आपको जयजय कार हो। हे नील कंठ! आपके गले में नागों की माला है। आपके मस्तक पर तीन चंद्रमे उज्ज्वल हैं। मैं आपको ड़ंड़वत प्रणाम करने की तीव्र इच्छा रखता हूँ।

आपकी सुन्दर जटाओं में से गंगा जी धारा बहती है, हाथ में त्रिशूल है और खोपड़ियों की माला गले में पहने हुए हो। आपने ही विष पी लिया है। मैं आपको ड़ंड़वत प्रणाम करने का उत्सुक हूँ।

हे शिवशंकर! आपका वाहन वृषभ है। आप सरकार हैं, सरदार हैं। और पार्वती जी आपके संग संग रहती है। हे उमापति आप घट घट में समाए हुए हैं। मैं आपको ड़ंड़वत प्रणाम करता हूँ।

हे भस्माधर मस्त मलंग निरा

तू ही भक्तों के दयासागर तथा कृपासिंधु हो! हे दयालू मुझे शुभ फल दीजिए। मैं आपको डंडवत प्रणाम करने का उत्सुक हूँ।

अन्धे के अन्धकार को दूर करो। क्रोध, काम, लोभ, मद, मोह को निवारो। मैं आपको डंडवत प्रणाम करता हूँ।

हे "शंकर"! अपने ही मन में उसे ढूंढ ले। इस में एक ही ओंकार बसा हुआ है। दस रंग छोड़कर तुम शुन्याकार को प्राप्त होंगे। मैं आपको डंडवत प्रणाम करने के लिए उत्सुक हूँ।



मैं अपने सच्चे मन से आपकी आराधना करता। हे हमारी भवाणी आपका जय जयकार हो। मैं घर से दूध का बर्तन भरकर ले आता। मैं आपके ज्वालामुखी तेज को जय जयकार करूंगा।

हे माता आपही संसार सागर को पार कराने वाली हो। हे हमारी भवाणी आपका जय जयकार हो।

तुलामुला (कश्मीर) में आपका आसन है। आपका सिद्धपीठ है। हे राज्ञा भगवती तुम समय की रक्षाकारिणी हो। तू ही राजाओं को राज्य दिलाने वाली हो। हे हमारी भवाणी तुमको जयजयकार हो।

तुम ही समीर पर्वत पर सदा ही आसन लगाए बैठती हो। जल की स्वर्ण गद्दी पर तुम सुन्दर तथा शोभायमान हो। तूही भगतों को मुक्ति दिलाने वाली हो। हे हमारी भवाणी आपको जयजयकार हो।

तूही आदीनों की आदीनता हरती हो। आपका ही सब पर अधि-कार है। तुम ही तो अष्टादश भुजा हो। हे हमारी भवाणी आपका जयजयकार हो।

आप ही के यहाँ से सिद्ध तथा साधु निकलते हैं। मेरे मन की मैल तथा मोह का जंग दूर करले। हे देवी! मुझे वर दो क्योंकि तेरे ही वधान से मुक्ति मिलती है! हे हमारी भवाणी तेरी जय हो।

हे देवी तुम उज्जवल हो मुझे दर्शन दीजिए। तुम ने ही असुरों का समहार किया।

मैंना के रूप में समीर पर्वत से एक भवाणी तुम आ गई। हे हमारी भवाणी तुम को जय जयकार हो।

कश्मीर मंड़ल पर आपकी कृपा दृष्टि है। जल को सुखाकर आपने राक्षसों का समहार किया है। आपकी ही दया से फल उत्पन्न होते हैं। हे! हमारी देवी आपको जय जयकार हो।

तूम, सगर पर भी दया करले।

मुझ भगत पर दयाकरने वाली मुझे अपना ले। "शंकर" की आराधना की ओर ध्यान दे। हे दया करने वाली देवी! मुझ पर दया कर। हे हमारी भवाणी आप को जयजयकार हो।

●

ओंकार रूप है तेरा हे शिवाकार!
हे जगत ईश्वर तुम्हारी जयहो!

तुम तो आनन्दस्वरूप निराकार हो! प्रजा में आपने ओंकार रूप से उदय किया है। हे। विघ्नहर्ता मेरे विघ्नों का निवारण कर ले! हे जगत् ईश्वर तुम्हारी जय हो।

आप अपनी जटाओं में गंगा जी की धारा को ग्रहन किए हुए हो। आप के गले में नीलकण्ठ शोभायमान है। आपके उज्ज्वल मस्तक पर तीन नेत्र हैं जो चन्द्रमा की भांति चमक रहे हैं। हे

जगत् ईश्वर तुम्हारी जय हो!

हे भस्माधर सन्यासी जटाधारी। आपके बाएं तरफ़ उमाजी हैं। आप अपने हाथ में सुन्दर कमल लिए हुए हैं। आपके गले में सर्पों की माला है। हे जगत् ईश्वर तुम्हारी जय हो।

आप तो ऋषभ पर सवार हैं। मेरे मनके पालने में हे गुरु देव आपका स्थान है। आपका निवास हरमुख पर्वत पर है तथा आप हरिद्वार के निवासी हैं। हे जगत् ईश्वर तुम्हारी जय हो।

अन्धे के अन्धकार को दूर कर ले। दासों के संकल्प तथा चिन्ताओं को निवारिए। अरे "शंकर" तू सूहम्सू पढ़ ले। हे जगत् ईश्वर तुम्हारी जय हो!



रात दिन केवल शिव शिव स्मरिये।
जीते जी मरिये वही आपके धन भाग्य हैं।

अपने मन में ईश्वर की स्मरणा कीजिए। उसी से भवसागर पार होजाओगे। भगवान की नामस्मरण करिए। जीते जी मरिये वही आपके धन भाग्य हैं।

अपने आपको पहचानिए और उस बिन्दु का ध्यान कीजिए और ज्ञात कीजिए कि ईश्वर कहाँ होते हैं। अपने गुरु के पास मन्त्र पढ़िए। जीते जी मरना ही आपके धन भाग्य हैं।

पापों से उसीतरह मुक्त हो जाइए। जैसे पोष मास में पेड़ केसारे पत्ते गिर कर पेड़ खाली हो जाता है। वही पाप तथा पुण्यों से इन्द्रियाँ मुक्त कर

लीजिए। दस दानों की खिचड़ी पकाइए। जीते जी मरना ही आपके धन भाग्य हैं।

मन के घोड़े को मैदान से ढूंढ निकाल और पकड़कर उसे दाना भूसा खिला। बार बार खाते खाते ही रहकर बीच में ही नहीं मरिए। जीते जी मरना ही आपके धन भाग्य हैं।

समतुलित तथा सीमित रूप से खाइए और सीमानुकूल खाने को अपनाइए। जान लीजिए वही आपके उन्नत तथा सौभाग्य हैं। जीते जी मरना ही आपके धन भाग्य हैं।

ज्ञान रूपी फल को मनरूपी भूमि में बोइए। गुरु के हल (गुरुरूपी हल) से पहले इस भूमि को जोतिए। तत्पश्चात शषकला के जल से इसकी सिंचाई कीजिए। जीते जी मरना ही आपके धन भाग्य हैं।

विचार रूपी क्रांती से फल काटिए। अपने मन में दुविधा तथा घृणा को पूर्णरूप से समाप्त कर लीजिए। अपने समस्त शरीर को वश करके प्राणों के साथ मित्रता करके रहिए। जीते जी मरना ही आपके धन भाग्य हैं।

हे "शंकर" अभी भी समय है। अभी से इसे समझ ले। इसका अनुभव करले। प्राणों को ही आनन्दस्वरूप मान लीजिए। प्राणों को ही मिलाकर इसका प्रदीक्षण कीजिए। जीते जी मरना ही आपका धन भाग्य हैं।



हे भगवान मैं क्षण क्षण आपकी स्मरण करूंगा। हे गुरु स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार करलें।

आपने बड़ाभारी समारोह नियोजित किया है और विभिन्न प्रकार के दृश्य दर्शाये। आप स्वयं ही दर्शक

हैं तथा कलाकार भी हैं। हे गुरु के स्व-रूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार करलें।

कई तो वर्ण धारण करते हैं। और कई वर्ण धारण करके भी आपके द्वारा निकाले गए हैं। कई रंगने वाले अपने वस्त्र रंगलेते हैं। हे गुरु के स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार करलीजिए।

कई तो मरे हुए होकर भी जी-वित होते हैं और कई आपके ही द्वारा मरने पर भी जीवन को प्राप्त हो गए हैं। कई संसार में जन्म लेकर ही अपने को समझ पाते हैं। हे गुरु के स्वरूप! मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए।

कई अपना समस्त जीवन गुरु की खोज में खो बैठते हैं। तिसपर भी वे उसे पाते नहीं हैं। कई उसे अपने आप में मिलकर तथा पास होकर भी

जान लेते हैं, पहचान लेते हैं। हे गुरु के स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए।

गुरु अन्धे को प्रकाश प्रदान करते हैं। गुरु ही अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करता है। उसे तो निशदिन आप ही आप दिखाई देते हैं। हे गुरुस्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार करलीजिए।

पक्का तथा पुख़्ता बनकर अर्थात सिद्ध बनकर ही उनकी खोट दूर हो जाती है। वे प्राणी जो आपही को स्मरण करते हैं। जो प्रतिपल आप का ही जाप करते हैं। हे गुरु स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार करलीजिये।

आप आनन्द सागर हैं। संत जनों के लिए मदिरा के प्याले भरकर देते हैं। वे आनन्द मग्न होजाते हैं। आप

देते हैं किसका साहस होगा जो उस से छीन ले। या उसको कौन रोक सकेगा। हे गुरु स्वरूप आपको मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

रस्सी प्राणों की होती है, जिसे वह इकट्ठा करता है। योगी इसको ही इकट्ठा करके वट देता है। उसके पश्चात वे इसी रस्सी को खींचा करते हैं। हे गुरुस्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार कर लीजिए।

विचार रूपी नाविका में वे किसप्रकार बैठते हैं। गुरु उन्हें घाट (तट) दर्शाता है। गुरु के ज्ञान से ही वे लक्ष को प्राप्त होते हैं। हे गुरु स्वरूप आपमेरा प्रणाम स्वीकार करलीजिए।

बुरे विचारों में रुचि न रख उस से तो तुम भटक जाओगे। भले विचारोंमें

रुचि रखने से इस भूवसागर के घाट तक पहुंच पाओगे। तत्पश्चात घाट पर से तुम अवश्य ही ऊपर चढ़ सकते हो। हे गुरु स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए।

जो प्राणी पुण्य रूपी चश्मे को संभालता हो। उसके यहाँ प्रफुल्लित कमल ही खिलेगा और वहा सदा कमल पर आसन धारण करने वाले का ही दर्शन करता रहेगा। हे गुरु स्वरूप आपको मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

कई कपटी प्राणी अपने प्राणों की सोदे बाजी में लगा रहेते हैं। परन्तु कई प्राणी आप से ही अध्ययन करने की शिक्षा प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति सत्य के शास्त्रों का ही रस लेते हैं। लाभ प्राप्त करते हैं। हे गुरु स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार कर लें।

कई अध्ययन करके मूर्ख ही बन जाते हैं। कई इसके विरुद्ध अर्थात बिना अध्ययन के ही रसपान करते हैं। कई प्राणी रस प्राप्ति पर भी इठलाते हैं हे गुरुस्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार कर लीजिए।

कई प्राणी शमकर पागल हो जाते हैं। शमने का अर्थ है बुद्धि स्थिर होना। बुद्धि का विकास होना। क्योंकि बुद्धि के लुप्त होने पर प्राणी के पैर ड़गमगाते हैं, हिलते हैं। हे गुरु स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार कर लीजिए।

"शंकर" ईश्वर की लीला का गान करता है। वह शिवशंकर को कहाँ जानता है। हे शिवशंकर आप स्वयं दयावान हैं। अतः आप ही उस पर दया करें।

हे गुरु स्वरूप आप मेरा प्रणाम स्वीकार करलीजिए।

●

हे भगवान! आप विभिन्न रंगों से इस काया रूपी चोले याथैले में प्रविष्ट हुए हो। हे मेरे मन तूकेवल राम नाम का जाप करले।

जैसे लुहार फुंकनी से फूंकता है। अन्दर से ही मेरा देह शमकर रहजाता है। जब भटी में केवल राख इकट्ठा होजाता है। हे मेरेमन तू राम नाम का जाप करले।

मैं सभी द्वार बन्द करलेता और पूरे प्यार तथा लगन से उठता। शायद तोता मैना से मिल जाता। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

मैं आपही के पीछे पीछे

निकलों। मैं आपकी राहें देख सकूँ। मैं इसी सरोवर में डुबकियाँ मारूँ। अर्थात गोते लगाओं। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

है तो यह संसार केवल असार। इसमें आना जाना बाजार की भाँति जान लेना चाहिए। केवल दो तीन दिन का सैर सपाटा है। हे मेरे मन तू राम नाम जाप ले।

अन्त में घर ही जाना है। लता के फूल गिरने ही हैं। यदि आप पुरो वचन रहेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर लीजिए।

हे प्यारे मैं प्रातः समय ही निकलता और रास्ते रास्ते आपको ढूंढ़ लेता। मैं यह देख लेता कि उसका निवास स्थान कहाँ है। वह कहाँ पर

छिपा रहता है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

सर्व प्रथम मैं गुरु को खोज लेता वह ही मुझे संकेत कर लेता तथा मुझ में जागृति आजाती। मुझ बेस्वर में स्वर आजाता। मेरे में होश आजाता। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

गुरु अन्धकार में प्रकाश है। यदि मैं ऐसा कहलेता तो रहस्य खुल जाएगा। उसी को सुप्रकाश कहते हैं। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर लीजिए।

वे मेरे घर ही मुझे बुलाने आजाएँगे और मैं अपने प्रण पर ड़टा रहोंगा। और ड़ाली से फूल गिर पड़ोंगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

फिर जब प्राण निकल पड़ेंगे। उसके बाद कौन लौट कर आ सकेगा। यद्यपि सभी उसके साथ भी हूँ। जो गया सो गया। लौटना असम्भव है। हे मेरे तू राम नाम का जाप करले।

फिर सारे सम्बन्धी इकट्ठे हो जाएँगे और आधी रात को रोते रहेंगे। वे एक दूसरे के साथ बातें करेंगे। कोसेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करलें।

अब लोग इसके इर्द गिर्द बैठेंगे। और इसके जीवनभर के काम पर चर्चा करेंगे। उसके बाद अपने मन को तस्सली होजाएगी। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे तो इसको जोर जोर से ठेस पहुँचाएँगे। जिससे उसके प्राण शीघ्र ही निकल जाएँगे और वे ऊपर नीचे

सभी जगहों पर शोर मचाएँगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे तो इसे कभी एक तरफ़ से उठाएँगे, कभी दूसरी तरफ़ से। और दिखावे की खूब उच्छल कूद होगी। वे आँसू भी बहाएँगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे जोर जोर से चिल्लाएँगे। उसी से उनको छुटकारा मिलेगा। और तुरंत उसके प्राण निकल आएँगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर लीजिए।

कहेंगे वे आँसू बहाते बहाते कि अंधा क्या दिखाएगा। त्रिषकाल देह को सुलाएँगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

कहेंगे जाओ आप अपने

रास्ते। इस स्थान पर क्योंकर ठहरे हो। यह सब तो तुम्हें स्वयं सहन करना होगा। निभाना होगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे यही कहेंगे कि यह शीघ्रातिशीघ्र मरे। वे तो इसी का हाल देखने में मग्न हैं। उनका विचार है कि उसके शीघ्र मरने से उनके लिए कुछ बच जाए। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे जोर जोर से विलाप करेंगे। इसके कानों तक बात पहुंचायेंगे कि वे क्या क्या कहते गए। वही तुम्हें भी होजायेगा तू यह विचार नहीं सकता है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

आपने अपने पिता का क्या दृश्य देखा। तुम भी उस मूल रहस्य को

प्राप्त हो जाओगे। लोभ बड़ी बीमारी है।

इसकी क्या चिकित्सा हो सकती है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

तुमको गर्म पानी से स्नान कराएँगे। देखेंगे कहीं यह अभी जीवित तो नहीं है। देखेंगे कहीं इसके पास सोन चांदी इत्यादि नहीं है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

स्नान कराके बाहर निकाल देंगे और कपड़े इसे लपेट लेंगे अर्थात कफ़न पहनाएँगे। तत्पश्चात धीरे धीरे अरथी वाले फटे पर लिटा देंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

सभी इसको कंधा देंगे और इसे बाज़ार के बीच से ले जाएँगे। परन्तु कोई इसका साथ नहीं देगा। कोई भी यारी नहीं करेगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

इसे कहीं दूर श्मशान घाट ले जाएँगे। वहाँ पर बड़े बड़े लकड़ों से चित्ता बनाई जाती होगी। घर पर अब उसके लिए कोई भी रोता नहीं होगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

कोई वहाँ आयेगा। वह हाथ में एक कुल्हाड़ी लिये होगा। वही आग लगा देगा इसकी चिता को और शीघ्र ही आग की ऊँची लपटें दिखाई देंगी। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

तब वह उठेगा और घर की ओर चलने का यत्न करेगा। चढ़ाई पर चलते चलते थक जाएगा। जिसको क्षण भर के लिए भी रुकना होगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

उसे अकेला और असहाय छोड़कर चले जायेंगे। जलाकर दूर

मैदान में छोड़कर चले जायेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

जब वे घर लौट आयेंगे। वहाँ पहुंचकर घरवाले कहेंगे कि आपके लिए खाना परोसा रखा गया है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

रे प्राणी कोई आपके साथ नहीं चलेगा। आपकी भुजाएँ, टाँगें, तथा आपके प्राण भी आपका साथ नहीं देंगे। इसी तरह से बहुत सारे अब तक जा चुके हैं। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

जो लोग इस संसार में आए वे मोह माया में झकड़े गए और वे ज्ञान से दूर रहे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

इसको महसूस किये बिना ही

तू परीशान मत होजा। तुम्हें इसे समझना होगा। तू संसार रूपी पेड़ के पत्तों की भांति गिर जा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे सब एक दूसरे की तरफ देखते रहेंगे। कहीं किसी तरह से ठहराव नहीं है। माया अर्थात च्यन सम्पति का पूर्ण रूप से निरीक्षण तथा खोज करेंगे। ढूंढ़ लेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

प्राणी असत्य को अपनाते हैं। असत्य में रुचि रखते हैं। सांसारिक माया अपना जाल फैलाए रहती है। इसी कारण इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

मोह तो इनके सामने उपस्थित है। एक संतान कह उठेगा। वह भी खाये पियेगा और इसका मन इसी की ओर लगेगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

वे तो माया रूपी सम्पति को समेट लेंगे। एक दूसरे से छिपा कर रखेंगे। अपनी जानकारी आपसी व्यवहार, सम्बंध तथा सम्पर्क स्वयं काट लेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

वे आपसमें एक दूसरे के साथ लड़ाई झगड़ा करेंगे। दोनों ही अपना अपना ढूंढेंगे। इस लालसा से कि मैं ही अधिक भाग लेलूँगा। या मैं ही सारा लेलूँगा। इसी प्रकार वे दूध का दूध और पानी का पानी अलग अलग कर लेंगे। वाद विवाद करेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

उसे कुछ भी याद नहीं रहा क्योंकि उसे तो माया की इच्छा थी। अब तो उसे ऐसी दवाई देंगे जिससे उसे एक जगह पर बैठने का सुख नहीं होगा। उसको बार उधर इधर आने जाने की चेष्टा रहेगी।

हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

यहाँ कुछ भी लेना देना नहीं है। यह तो केवल आवागवन का चक्र है। केवल कुम्हार के चाक को घुमाना है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

मरना या मृत्यु याद नहीं रही। अपने व्यवहार में लीन रहे। और इस संसार के व्यवहार में ग्रस्त रहे। हे भूले ग़ाफ़िल होशयार होजा। इस धन दौलत को तुच्छ मान ले। मोह रूपी संसार को कांटों के जाल के समान मान ले। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

उसके बाद भी कुछ मिलने वाला नहीं। कोई कुछ कहेगा नहीं। विचारे विना ही रहेंगे। कोई आपकी चिनता नहीं करेगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

समय पर तू इसे महसूस करले।

कि तलाश तथा खोज आवश्यक है। गुरु के पद चिह्नों पर चलना है। अज्ञान को जलाना होगा। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

अज्ञान अन्धकार है। यदि कहा जाए तो बात में रहस्य नहीं रहेगा। छोड़ो इस पतले पन (ओछापन) को मोटापे को अपनालो। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप करले।

सत्य के ध्यान में गहराई ला। इसमें भी मोटापा अर्थात गम्भीरता ला। ओछापन छोड़ दे। गुरु के साथ सच्ची तथा शुद्ध वासना से जान पहचान कर ले। ज्ञान ही इसका सार होता है। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

इस सबका सार तो केवल गुरु-का धारण करना है। ढूंढ़ ढ़ूपट करके उसे अपने मन में बिठा ले। वे ही आपको इस

सांसारिक जाल से बन्धनों से मुक्त करेंगे। आपकी बाधाओं को दूर करेंगे। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।

मैं अपनी पूरी श्रद्धा से अपने मन की इच्छा से मैं दौड़े दौड़े आया। हे "शंकर" तू फैली फैलाई शाखोओं को काट डालिए। जो भी बन्धन हैं, बाधाएँ हैं उनको त्याग दीजिए। हे मेरे मन तू राम नाम का जाप कर ले।



मेरी समझ में नहीं आता कि भला समुद्र पर पुल लगाया जा सकता है। मेरे रोम रोम में वही समा जाए!

जब मैं निकल पड़ी तो उसने क्रोधित होकर भौएँ चढ़ा कर मेरी ओर क्रोध से देखा। क्यों रे भटके! समझते क्यों नहीं। इस असार संसार को क्यों

पकड़े रहते हो। मेरे रोम रोम में वही समा जाए! मुझे प्रत्येक स्थान पर वह ही वह दिखाई दे!

मैं ने मोह तथा अज्ञान की लकड़ी इकट्ठा की। बार बार इसको फूंक मारता गया। गुरु की एक चिंगारी से इसको जलाया। मेरे रोम रोम में वही समा जाए। मुझे प्रत्येक स्थान पर वही दिखाई दें!

जन्म पाकर मैं ने इसे क्यों खो दिया! बालक अवस्था में उसे पहचान नहीं पाया। विषयों के हाथी पर लोभ को चढ़ाया। मेरे रोम रोम में वही मिले। मुझे प्रत्येक स्थान पर वही वह दिखाई दें!

पल पल क्षण क्षण उसने मुझे भगाया और दौड़ाया। वह मेरा मित्र न बन सका। वह तो भले ही बड़ा मित्र था। परन्तु दुःख तो यही है कि मैं ने कभी

उसे ढूंढ़ा नहीं। मुझे रोम रोम में प्रत्येक स्थान पर वह ही वह मिले!

ढूंढ़ते ढूंढ़ते हार गई कि कैसे बीमारी तथा पीड़ा दूर हो सके। मैं ने जगह जगह तलाश किया पर उसे पा नहीं सकी। जिसको स्वयं उसने दिया वही अपने लक्ष को पा गए। मुझे रोम रोम में प्रत्येक स्थान पर वह ही वह मिले।

बड़ा होते समय मैं ने वह नहीं समझा कि संसार अस्थिर है। असार है। गुरु के मन्त्र से मैं अब समझा। मेरे रोम रोम में वह समाएँ। मुझे प्रत्येक स्थान तथा प्रति पल वही दिखाई दें!

मुझ से ग़लती हो गई, भूल हो गई। नहीं तो वह मेरे पास ही था।

पास होते हुए भी मैं ने उसे दूर दूर ढूंढा। संसार ही एक जाल था, फंदा था, मैं ने उसको काटा क्यों नहीं। मेरे रोम रोम में वह समाएँ। मुझे प्रत्येक स्थान पर वह ही दिखाई दें!

अस्थिर संसार को ही मैं सार समझ बैठा। अनशवर माना। प्राणी की आशा ही उसकी भूल है। जिसने यह सारा रहस्य समझ लिया उसी ने सब कुछ पाया। मुझे रोम रोम में प्रतिपल वही दिखाई दें!

मैं ने मूर्खता के कारण सन्तान में ही सन्तोष जाना। द्रव्य अर्थात धन की दासी को उसकी पालना करने के लिए दे दिया। मेरे रोम रोम में प्रतिपल वह ही वह दिखाई दें!

मैं ने तरु या पेड़ तीन प्रकार

का देखा। पहले प्रकार का तो केवल वह ही है। दूसरे प्रकार गुरु ही है। मुझे रोम रोम में वह समा जाएँ तथा प्रत्येक पल वह ही दिखाई दें!

सारगर्भित तथा रहस्यमय तीस या खींचता हुआ देखा। जिसने योग रूपी रस्सी को खींच लिया। फिर अपने अन्दर झांककर उसे खोजने में सफल हुआ। मुझे रोम रोम में प्रति पल तथा प्रत्येक स्थान पर केवल वह दिखाई दें!

मदिरा पिला कर "शंकर" की चिन्तनशक्ति ही ले गया। संसार का ज्ञान प्रत्यक्ष तथा प्रकट है। नहीं तो सारा कुछ ज्ञान से ज्ञात हुआ। मेरे रोम रोम में वह ही समाएँ। मुझे प्रत्येक स्थान पर प्रति पल केवल 'वह' ही दिखाई दें!

सूक्ष्म परमपद को ही ढूंढ़ना चाहिए। वही रूप धारण करना चाहिए।

वही रूप आदि देव भगवान का एकमात्र रूप है। वही रूप सूक्ष्म से अति सूक्ष्म है। वही रूप अपने आप से तेजभरा प्रकाश छटकता है। वही रूप ध्यान में लाना चाहिए।

संसार सागर तो मधुरता से भरा हुआ लगता है। परन्तु यह नश्वर है, अस्थिर है। इसकी परख करके हमने इसे कभी भ्रम समझा नहीं। उसी रूप का ध्यान धारण करना है।

समुद्र की थाह (तल) तक पहुंच नहीं पाओगे। यह तो गहरे से भी गहरा है। इसे पार करने में बह जाने तथा डूबने का ही भय है। इस आशा से गुरु का हाथ ही थामना है। हमें वही

रूप ध्यान में रखना है।

पहले चिन्तन करके गुरु को ढूंढना चाहिए। गुरु ही हमें हाथ पकड़ पकड़ कर शिक्षा दे सकता है। अतः उसी के चरण पकड़ ले सम्भवतः कहीं लक्ष्य मिलेगा। हमें वही रूप धारण करना चाहिए।

गुरु की सेवा में ही लगे रहना चाहिए। उसी से आपका विकास होगा। सांसारिक मोह में फंस नहीं जाओगे। वही रूप धारण करना चाहिए।

गुरु की सेवा को प्रत्यक्ष रूप में देखना चाहिए। वही सारी व्याधियों को नष्ट करने वाला है। उसी का अन्तर प्रकट होने को आएगा। अतः वही रूप ध्यान में धर लेना है।

गुरु की सेवा के लिए निकाल

पड़ोगे तो सब से पहले आपके सिर से पापों
बोझल गठड़ी उतर जाएगी। गुरु चरणों में
प्रेम तथा भक्ति ही पापनाशक होगी। वही
रूप धारण करना चाहिए।

गुरु के सत्वचनों को सुनना चा-
हिए फिर उनपर विमर्श करना चाहिए। एक
वैराग्य ही मोह को काटने वाला होता है।
अतः वही रूप धारण करना चाहिए।

विचार रूपी अग्नि से हमें अपने
अज्ञान रूपी जाल को जला देना चाहिए।
अहम्भाव के शस्त्र को जलाकर तोड़
देना चाहिए। वही रूप धारण करना
चाहिए।

चंचल सुभाव के घोड़े पर
चढ़ने वाला हो तो विचार रूपी चाबुक
से अपने वश करना चाहिए। तभी आप
बीच रास्ते से भटक नही पाएंगे। वही

रूप धारण करना चाहिए।

काम को भी आगे से विचार ही काटने वाला है। काम से मुक्त होकर बल तथा शक्ति आती है। जब काम शम हो जाए तो व्यर्थ बोलना बन्द हो जाएगा। वही रूप धारण करना चाहिए।

काम तो चोरी छुपे आपका पीछा करने वाला है। काम ही तपस्या से लौटा सकता है। पहले तो काम हमें अपने आपसे कटवाता है। वही रूप धारण करना चाहिए।

काम तथा क्रोध ही भागना आरम्भ करेगा। क्षमा करने से उसे उड़ाया जा सकता है। क्षमा क्रोध को समाप्त करती है। वही रूप धारण करना चाहिए।

अहंकार को दया ही परास्त करती है। दबा सकती है। दया के कारण

कर सकता है। दया के कारण अहम् भी शम जाता है। दयावान प्राणी को अहम् कभी हरा नहीं सकता है। वही रूप धारण करना चाहिए।

लोभ तो दीवारों के ऊपर से चोरी करने पर विवश करने वाला शत्रु है। दीवारों पर चढ़कर कभी कभी नीचे गिरने की भी सम्भावना होती है। वही रूप धारण करना चाहिए।

संतोष तो लोभ को मात दे सकता है। मोह रूपी बाधाएँ दूर कर सकता है। जिसने इन पांचों को जीत कर अपने वश में कर लिया। वही योग्य प्राणी कहलाया जा सकता है। वही रूप धारण करना चाहिए।

गुरु के उच्च शब्दों को जो समझता है। उनको आदर्श मानकर उन

पर चलता है। साधुओं, सन्तों तथा सभी सज्जनों की ओर ध्यान देना चाहिए। वही रूप धारण करना चाहिए। जिसने यही धारणा अपनाई वही लक्ष्य को प्राप्त हुआ।

ध्यान धारणा तो आनन्ददायक होती है। हम तो आनन्द ही की तलाश में रहते हैं। आनन्द को प्राप्त होकर दुःख दूर होजाएँगे। वही रूप धारण करना चाहिए।

गुरु पद सूक्ष्म तथ प्रत्यक्ष है। कर्मों के फलस्वरूप इसमें मोटापा लाया जा सकता है। ताकि तुम नित्य प्रातः इसकी ओर बढ़ते रहोगे। वही रूप धारण करना चाहिए।

पहले ये पांचों प्राणों को मिलना होगा। फिर ये पांचों एक ही में समोजाते हैं। अर्थात एक होजाते हैं। एक ही रूप में सामने आजाते हैं। एक

अकेले के साथ परिचय हो जाता है। वही रूप धारण करना चाहिए।

शिव तो पूर्ण रूप से साक्षात और प्रत्यक्ष है। वही आपके रास्ते में आने वाले पर्वत तथा दूसरी बाधाओं को दूर करने वाला है। शायद वह इन ही बाधाओं को हटा कर प्रकट होंगे। वही रूप धारण करना चाहिए।

शम दम का आभास तेज़ सुलगता दहकता होगा जिससे लोहा भी सोना बन जाता है। जब तुम भी सोना हो जाओगे तो जान लो कि तुम मुक्त हो गए। वही रूप धारण करना चाहिए।

ज्ञान के ही मार्ग पर चलना चाहिए। अज्ञान के सार को समझना चाहिए। केवल अनुग्रह द्वारा वह शीघ्र ही लक्ष को प्राप्त होता है। वही रूप धारण करना चाहिए।

उधर की कृपा दृष्टि तथा अनुग्रह

को महत्व पूर्ण मानना चाहिए। वहाँ किसी भी प्रकार की कमी नहीं, वह कभी अपूर्ण नहीं है। हे भगवान "शंकर" पर भी अपना अनुग्रह करते रहना। वही रूप धारण करना चाहिए।



गुरु के रूप में हे श्याम सुन्दर! मैं तुम को अपना लेता! हे गुरु रूपी ईश्वर! मुझ पर दया कर।

हे प्रकाश! गुरु के रूप में मेरा अन्धकार दूर करले। ताकि मुझे गुरु के अन्तर का ज्ञान हो। मैं अन्दर के प्रकाश से ही कुछ ज्ञात करों! हे गुरु रूपी ईश्वर मुझ पर दया कर!

जब मैं ने जन्म लिया तो ठीक उसी समय से मोह तथा अन्धकार ने घेर लिया। मैं नहीं समझा कि संसाररूपी, सरोवर बहुत ही गहरा तथा अथाह है।

तब मैं ने उसे महसूस नहीं किया था। मैं तो अन्धा हूँ, मैं क्या कर सकूँगा। हे गुरु! हे ईश्वर मुझ पर दया कर।

चिंतन तथा पिपासा मैं कभी भी समझा नहीं। मैं ने बुद्धि के बल से वैराग्य के द्वार को खोला। मैं अपने ही प्रयत्न तथा प्रयास से इसके भीतर से निकल आया। हे गुरु ईश्वर मुझ पर दया कर!

मैं ने इस सारे संसार को अस्थिर समझा। दुःख तो मुझे यही है कि मैं इस में क्यों डूब गया। मैं तो इससे तभी मुक्त हो सकूँगा जब आप दया करेंगे। हे गुर्वेश्वर मुझ पर दया कर।

हमारी नाविका पापों के बोझ से भारी तथा बोझल हो रही है। मैं ने अपने आप से कहा तू पाप न कर। आपके निकट ही सारा कुछ है। तुम स्वयं इसके ही एक

भाग हो आपको इसका ज्ञान नहीं। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर।

जब मैं जाग उठा, जब मैं समझ सका तो घर से निकल पड़ा। ताकि मैं उस के प्रभाव तथा उसके अन्तर को देख सकूँ। इसके लिए मैं गांव गांव तथा नगर नगर में भटकता रहा। हे गुर्वेश्वर मुझ पर दया कर!

मैं उस ईश को देखने के लिए उसे ढूंढ़ने निकला। घूमा, फिरा। मेरा यह विश्वास था कि वह कहीं न कहीं, किसी न किसी वेश में मिलेगा। परन्तु घूम घामकर थक कर [illegible] मैं हार कर घर लौटा। हे गुर्वेश्वर मुझ पर दया कर!

मैंने बुद्धि से उसे जानने का प्रयत्न किया। उसे कहाँ कहाँ से ढूंढ़ लूँ। मुझे वही गुरु शब्द (गुरु पद) दीजिए, जिस से उस और मेरे बीच का अन्तर मिट

जाए। ढूंढ़कर ही मैं ने अपने गुरु "जनार्दन" को पाया। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

"जनार्दन" स्वयं ईश्वर स्वरूप हैं। गुरु अंधकार तथा मैल को दूर करता है। गुरु ही वास्तव में पथ प्रदर्शक होते हैं। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

पांचों के समान गुरु का एक मात्र ज्ञान है। जब ध्यान नहीं रहा तो वे सुद्ध तथा बे स्वर हो गए। जब मूर्खता तथा अज्ञान में रह गए तो ज्ञार का विचार मिल गया। हे गुर्वेश्वर मुझ पर दया कर!

उसने कहा कि पांचों को मिलाइए। पांचों प्राणों को उसी में लय होने दो। उन पांचों को इकट्ठा करो और गुरु पद (शब्द) का ध्यान करो। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

गुरु पद (शब्द) पढ़कर आशाओं

तथा इच्छाओं को बिसारो। वही श्वास आपको बड़ा बाज़ार दिखाएँगे। बाजार बड़ा है। इसमें मोह अंधकार फैला हुआ है। हे गुरु ईश्वर! मुझ पर दया कर!

रात्रि को अज्ञानरूपी अंधकार समझ ले। दिन तो ज्ञान का अन्तर है। ज्ञान का सार है। तुम तो स्वयं बुद्धिमान हो। अतः स्वयं इसकी परख भी करले। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

स्वयं अज्ञान तथा ज्ञान का अन्तर मालूम करके ज्ञानरूपी प्रकाश द्वार की ओर से आगे जा। उसी प्रकाश द्वार से ऊँची दीवार को पार करले। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

दीवार तो भोज पत्र की है। उस का कोई द्वार ही नहीं। उसको काटकर खिड़कियाँ तथा दरवाज़े बना लेना। धीरे

धीरे तथा बार बार इसे पकड़कर रखले। इसे द्वार से बाहर कहीं भी जाने न देना। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

एक बाल (रोम) से एक हाथीको पकड़ना एक शिल्प है, कला है। ऐसा न हो कोई अनजान अनाड़ी इसके साथ हाथ लगाए। अपनी क्रिया तथा कलासे ही मोती हाथ लग जाता है। ऐसा तो इसके ज्ञानी ही कर सकते हैं। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

दूर दूर भटकने की आवश्यकता नहीं। तू अपने पास तथा अपने भीतर ही इसे खोजले। दूर दूर ढूंढ़ना ही आपको फंदे में फंसाता है। दुयी (भिन्नता) जब मिट जाएगी तो आपको स्वयं रास्ता दिखेगा। हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!

इससे आगे चलकर आपको

ओंकार बनाना चाहिए। उससे ऊपर या उससे परे कुछ भी ढूंढ़ना उचित नहीं है। उसी से तुम उच्च पद को प्राप्त होंगे। हे गुर्वेश्वर मुझपर दया कर!

ईश्वर की स्मरणा नित्य मनसे, तथा श्रद्धा से करनी चाहिए। क्योंकि ताज़ा बीज से अंकुर फूटेगा। यही अंकुर फूट फूटकर कोई न कोई प्रभाव डालेंगे ही। हे गुर्वेश्वर मुझ पर दया कर!

हे दयालू ईश्वर शिव शंकर! "शंकर" को ज्ञान द्वार खोल ले! तभी हे "शंकर" तू गुरु के साथ जानकारी तथा उसकी जान पहचान कर ले। वही फिर आपका द्वार खोलेगा! हे गुर्वेश्वर! मुझ पर दया कर!



गुरु का शब्द मन से जप लेंगा,
मैं केवल हर हर जप लूंगा।

मन तथा पूरी श्रद्धा से निकलना चाहिए। सब में उसे ढूंढ़ना चाहिए। ढूंढ़ कर गुरु को पाना चाहिए। उसे प्राप्त कर ले। मैं केवल हर हर जप लूंगा।

हे मूढ़! हे मूर्ख! बाद में समय बीतने पर ध्यान करना। संसार एक बड़े पेड़ के समान है। यह समझ ले। अपनी नाविका को खींचते रहो। मैं केवल हर हर जप लूंगा।

गुरु की शिक्षा आपके लिए एक खींच और झटका है। जिसने इसको महसूस किया। और जिसके मन में यह गुरु शब्द उतर गया। वही सफल हो गया। मैं केवल हर हर जप लूं!

जिस को सच्चा गुरु मिलेगा।

वह उसे आनंद रूपी मदिरा पिलाएगा। उसी से उस में शक्ति का संचार सदा होता रहेगा। मैं हर हर जपलूँगा।

गुरु ही सब का सार तथा सत्य का प्रकाश है। वही हमारी इच्छाएँ तथा आशाएँ पूर्ण करता है। वही परम प्रकाश दर्शाता है। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु तो वही स्वयं वही है। उस ने भी कहा 'वह' तो वही है। 'स' ही पढ़ले, उसी से वह मिलेंगे। मैं सदा केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु पथ प्रदर्शन करता है। पूरे चित्त विमर्श से आगे चलाता है। वह तो आनन्द तथा ज्ञान की मदिरा पिलाता है। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु आपके रास्ते में आपके साथ साथ हैं। वह यहाँ वहाँ पारलगाता

है। हे भटके मूर्ख! तू जा उसे ही पकड़ ले!
मैं केवल सदा हर हर जपलूँगा।

गुरु ही हमारे हाथ को पकड़ता है। वही हमें थाम लेता है। उसीके कारण हम वहाँ अर्थात लक्ष तक पहुंच जाते हैं। वही हमें अज्ञान से दूर रखते हैं। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु तो स्वयं ईश्वर हैं। वह स्वयं प्राण रूपी पनेरी की सिंचाई करते हैं। वही स्वयं दयालू शिव शंकर हैं। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु ही भक्त को ऊपर उठाते हैं और बहुत ऊंचाई पर पहुंचाते हैं। वह ऊँची मंज़िलों को छूता है। उसके बुरज के ऊपर ध्यान है। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

बुर्ज तो ब्रह्मांड ही होता है।

रास्ते में कुछ भी नहीं है। न कहीं लकड़ लकड़ियाँ थीं न कहीं घास फूस ही। वही गुरु इस छाया रूपी धुन्धयाली को दूर करता है। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

गुरु तो हमारे पथ में प्रकाश करता है। अन्धकार उसी से दूर भागेगा। वह आपको विनाश से बचाएगा। आप तो अविनाशी बन जाओगे। मैं केवल हरहर जपलूंगा।

गुरु तो स्वयं शिव जी हैं। तू उसी के साथ मित्रता तथा जान पहचान कर ले। उसे पूर्णतयः जान ले। उसी के ज्ञान से मनुष्य ऊँचा उठ सकता है। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु विकसित तथा प्रफुलित हैं। भगवान भी स्वयं वही हैं। यह तो उसी की कृपा है जिसके फलस्वरूप तुम बोल

सकते हो। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

गुरु अन्धकार को दूर करते हैं। उसी ज्ञान से शिव शंकर के दर्शन मिलते हैं। नहीं तो वास्तव में शिव वही होते हैं। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु तो प्रत्यक्ष सूर्य हैं। उसी को पकड़ ले। उसी के चरणोंकी भक्ति कर। दूर दूर ढूंढ़कर थक जाओगे। उसी के पास से आपको सारा ज्ञान प्राप्त होगा। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

गुरु हमारे मन के अज्ञान तथा मैल तथा अन्तर को दूर करता है। इस अज्ञान से बचकर मुक्त रहो। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

गुरु ही आनन्द हैं। मन से गोविन्द का भजन करते रहो। तब तो बीच की दूरी नहीं रहेगी। तुम तो उसके

साथ मिल जाओगे। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

गुरु तो प्रत्यक्ष रूप में शिव ही हैं। गुरु शब्द से ही मेरा विकास होजाएगा। तुम तो तेजस्वी हो। तुम्हारा मस्तक उज्ज्वल है। मैं केवल हर हर जपलूंगा।

जो गुरु तो स्वयं वह अर्थात ईश्वर होते हैं। वे ही दुखी तथा द्वेश को दूर करते हैं। उसी का ज्ञान हो जाता है। मैं केवल हर हर जप लूंगा।

आशा, इच्छा तथा चेतन का बोध होता है। रात्रि तथा दिन को ढूंढ़ कर खोज लगाते हैं। अन्दर से इस अग्नि के शरीर की सेवा करता है। मैं केवल हरहर जप लूंगा।

शम कर ही नम्र होकर उसकी भक्ति की जा सकती है। पल पल तथा

रोम रोम के दमन करने से उसकी सेवा हो सकती है। अहम् भाव को त्याग कर ही उस की भक्ति की जा सकती है। मैं तो केवल हर हर जप लूंगा।

माया से रहित अर्थात निर्माया होना चाहिए। दुषित भाव को त्याग देना चाहिए। योग तथा साधना से फूल खिल उठेंगे। मैं केवल हर हर जप लूँगा।

मन तो पुष्प होता है। कमल होता है। अन्दर के याग बल से इसे गर्मी पहुँचा दीजिए। तब जाके अष्ट-दल पुष्प विकसित होगा। प्रफुलित हो उठेगा। मैं केवल हर हर जप लूंगा।

गुरु की दयारूपी वर्षा से ही अज्ञान की मैल को धोकर साफ करूँगा। वही भस्म अंग अंग को मल लूँगा। मैं केवल हर हर जप लूंगा।

दिन रात उसी गुरु का नाम जप लूंगा। मन रूपी सरोवर पर उसका ध्यान करूँगा। ज्ञान से ज्ञान प्राप्त करूँगा। जान-कारी से जान पहचान करूँगा। मैं केवल हर हर जप लूँगा।

हे मूर्ख मन! तू इसकी परख कर ले। इसको भली भांति समझ ले। कहीं ऐसा न हो कि शाम हो जाएगी। दिन चला जाएगा। फिर कोई काम नहीं हो पाएगा। कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा। मैं केवल हर हर जप लूँगा।

जीते जी ही मरना चाहिए। गुरु पद का ध्यान धारण करना चाहिए। गुरु के पद चिह्नों पर चलना चाहिए। मैं केवल हर हर जप लूँगा।

इस संसार से जाने पर कुछ भी साथ नहीं लेना है। कुछ भी हाथ

नहीं आना है। इस भूसागर से तुम प्रथक होजाओगे। गुरु की भक्ति से ही सबकुछ ज्ञात होजाएगा। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

हे गुरु मैं विनती करता हूँ। मेरे मन में प्रेम, भक्ति तथा श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। अतः यदि आप इसकी तरफ़ ध्यान देंगे। इसपर विचार विमर्श करेंगे। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

हे गुरु! मेरी विनती आपसे यही है कि आप मुझ विनीत को गुरु 'सुपद' शब्द देकर कृतार्थ करें। जो केवल एक ही है। उसी आशा से बोलने वाला है। मैं केवल हर हर जपलूँगा।

"जनार्दन" (कवि शंकर के गुरु) स्वयं ऐसे ही गुरु हैं जो अज्ञान को दूर करने वाले हैं। ऐसा ही मेरी बुद्धि कहती है। मैं केवल हर हर

जप लूँगा।

हे "जनार्दन" हे मेरे गुरु महाराज! मुझ पर दया कर। आप अमृत के सागर हैं। "शंकर" पर आपही की कृपा है। मैं केवल हर हर जपलूँगा। केवल हर हर का जाप कर लूँगा।



समय पर उठ जाग और परमात्मा की पूजा करले। भगवान श्री कृष्ण की सेवा करले।

भगवान आपके मन में ही आसन धारी हैं। तुम यह जानते हुए भी इसको क्यों महसूस नहीं करते। सत्य पद की प्राप्ति के लिए तू गुरु के चरणों में जा। तू श्री कृष्ण भगवान की सेवा करले।

प्रात: भगवान की शरण में जाकर तू क्यों उससे कार्य सिद्धि के लिए विनती नहीं करते। उसी से मांग ले वह तो सर्वाधिकारी है। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

परम पद सुनकर तुम सत्य के सागर में तैरता नहीं, छलांग क्यों नहीं मारता। डुबकी क्यों नहीं लगाता। जिसने भी परम पद को ज्ञात किया वह भवसागर पार हो गया। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

अपने माता पिता तथा अपने गुरु की सेवा कर। जो ऐसा करेगा उसी का यह जीवन सफल होगा। वह सच्चा भाग्यवान होगा। जिस को 'सू' पद का ज्ञान होगा उसको ही गुरु मिलेंगे। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

जो इस संसार की इच्छा रखताहै, उसी को लोभ भी होजाता है। और इसी लोभवश वह संसारजाल में फंस जाता है। वही सांसारिक बन्धनों में झकड़ाजा-ता है। मोह के फंदे में बन्द होजाता है।
तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

पहले जानकारी प्राप्त करले। फिर उसी ज्ञान के फलस्वरूप अपने आप को भली भांति समझ ले। उसी से कच्चे गांठ कट जाते हैं। ऐसा करने वाले को ही मोक्ष मिलता है। अतः
तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

तू भगवान की पूजा करले। तू कमल तथा तुलसी भगवान के शीश चढ़ा ले। अपने मन में बैठे पुरुष की जान पहचान करले। सत्य के सागर में उसे नहला ले। उसके चरण कमल धो

डालिए। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

जिसने जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलाया। उसका जीवन फूल की भांति खिल उठा। शिव शिव का जाप करके शिव के साथ ही मिल जाता है। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

तू गुरु पद तथा गुरु के शब्द में लीन मग्न होजा। उसी से आनन्द फल प्राप्त होता है। जो भी अपने मन में इस सत्य का बीज बोएगा। वह ही उसका शुभ तथा आनन्द फल प्राप्त करेगा। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

जो काम क्रोध छोड़कर निश दिन सत्य असत्य के झंझट को त्याग कर सतविचार करता है। उसे तब यह

समझना चाहिए कि उसने सचमुच अपना जन्म सफल किया है। तू श्री कृष्ण जी की सेवा करले।

क्षण क्षण भगवान की शरण में जाओ। और नम्रता से उसे कह दे- हे दयामय! मुझ पर दया कर। धीरे धीरे तू ऊपर ब्रह्माण्ड पर चढ़ जाओ। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

मैं उस श्री कृष्ण भगवान के शुभ नाम के बलिहारी जाओं। वही तो इस पृथ्वी के अन्धकार को मिटाते हैं। हे भगवान मेरे मन दर्पण की मैल कुचैल को दूर करके इसे धो डाल। इसे साफ़ करले। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा श्रद्धा से कर ले।

सामने जो आए उसी का ध्यान कर। क्योंकि वास्तव में वही

ध्यान धारणा सच्ची है। तो तूभी जानकार ज्ञानी के साथ ही जानकारी कर ले। वही सच्चा ज्ञानी है। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

उस सत्य मार्ग की जानकारी गुरु से प्राप्त करले। मन का कमल कहाँ और कैसा होता है। उसके पश्चात तुम को अष्ट दल की यात्रा भी करनी होगी। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

तू यह कमल नीचे से ऊपर ले जाने में लग जा। तभी तो आपका शीश नीचे की ओर झुक जाता है। जिसमें मूर्खता है। वही नीचे की ओर है। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

जिसको उस प्रकार सरोवर से नाद बिन्दु उत्पन्न होता है। उस के लिए नित्य ही आनन्द उपजता

है। यह तो उसी की शाषकला आगे पीछे घूमती है। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

तू केवल एक गुरु शब्द में ही लीन हो जा। वह अकेले ही दुःखों को मिटाता है। पाँचों को मिलाकर धीरे से ही खिचड़ी बना लो। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

जो पाँचों को मिलाएगा। समझ लो वे सभी उसी को मिल गए। वही सू हम् सू होजाता है। अपने से बढ़कर ज्ञान तो उसी का माना जाता है। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

जो प्राणी प्रातः प्रभात काल में इस अमृत रूपी ज्ञान धारणा का पाठ करेगा। उसका शरीर कभी भी दुखी नहीं रहेगा। और जो इसके

प्रसंग को सायम् काल में पढ़ेगा उसे कार्य सिद्धि होगी। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

जो रात्रि तथा दिन में चार बार इसका पाठ करेगा। उसे स्वयं श्री भगवान दर्शन देंगे। वह मोक्ष को प्राप्त होगा। और वही स्वर्ग सिधारेगा। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा कर ले।

हे मेरे भगवान! तू "शंकर" के अज्ञान को दूर कर ले! वह तो है शिव शंकर आपही को ढूंढ़ता है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे भी शिवशंकर के साथ मिलाइए। तू श्री कृष्ण महाराज की सेवा करले।

हे गुरु मुख तुम सुन्दर हो!

मैं आपको मन के पालने में झुलाओं।
जब मैं ने माता की कोख से जन्म लिया।
उसने मुझे बड़ी मात्रा में दूध ही दूध
पिलाया। मैं ने उसे बुढ़ापे में सेवा की।
मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

मैं ने अपने मन में डूब कर
बात की। पुण्य का मार्ग ढूंढ निकाला।
बुढ़ापे में कहाँ का साहस और कहाँ का
बल होता है। मैं आपको मन के पालने
में झुलाओंगा।

गर्भ यात्रा का कष्ट अब
दूर हो गया है। अब कभी भी उसको
स्मरण करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।
आँखों को भी वह दिखाई नहीं देता है।
मैं आपको मन के पालने में झुलाओं
गा।

अब तो मुझे वह याद ही नहीं रहा। अब तो मैं ने बड़ना आरम्भ किया है। अब मेरी आँखों में वे भी खटकने लगे हैं। उनका प्यार ही नहीं रहा। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

बूढ़ा होकर मेरी और भी
मेरा विवाह किया गया।
ज्ञान बड़ गई। मौन बड़ गया। परन्तु अब तो और कष्ट आ खड़े हुए। मैं आप को अपने मन के पालने में झुलाओं गा।

अब तो शरीर कमज़ोर हो गया। इसलिए शरीर कष्ट भी आ खड़े हुए। मैं उस भय से अपनी जान समाप्त करूँगा। जब होश आ गया तो मैं ने इधर उधर को टाल दिया। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

मैं ने परम आसन किया। उस से तो बाधाएँ दूर की जा सकती हैं। उसे शिलवासन मिल जाता है। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

जब मैं कोठरी में प्रविष्ट हुई। कई मुझे दरवाज़े से खींचकर निकालने का प्रयत्न करेंगे। पुष्प लता में फूल खिल आएँगे। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

ऊपरले सिरे से ही मैं इस की सिंचाई करूँगी। उसी से फूल की भांति खिल उठूंगी। फिर तो कभी भी खत्म नहीं होजाओंगी। मैं आप को मन के पालने में झुलाओंगी।

चार पांच दिन दुल्हन बन कर देखने को मिले। उसके बाद थके मांदे होकर भी स्वयं पीछे मैं कुछ

नहीं दिया गया। आपका देव मज़बूत है परन्तु खाली है। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

होशयार रहो। होश संभालकर रहो। हे भगवान मुझे बड़े भय से मुक्त कर लीजिए। वह आपके ही पास है। दूर मत रहो। मैं आपको मन के पालने में झुलाओं-गा।

मेरे भय को दूर करके मेरे पास रहो। आप मामता के पास मत रहा कर। वह तो पास में है। उसी के बीच में रहो। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

सब कुछ ठीक ही तो है। उसे रुद्र कहते हैं। जिसने रेखता बनाकर ऊपर चढ़ाया। एक एक ज़ीने को बना-कर इस से मिला लिया। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

माता तो बुद्धि को बढ़ाती है।
उसका विकास तथा उसकी रक्षा करती
है। परन्तु पत्नी तो जड़ों को कमज़ोर
बनाती है। मेल मिलाप से नशोनुमा के
बदले कटाव आजाता है। मैं आपको
मन के पालने में झुलाओंगा।

उठकर हवा इसके अन्दर घुस
गई। कौन कौन से गन्धर्व जन्मे परन्तु
वे पुनः मिट्टी के से मिट्टी होगए।
मैं आपको अपने मन के पालने में ही
झुलाओंगा।

मट्टी बस खाली। मट्टी ही
मट्टी। ऊपर नीचे हरजगह केवल मट्टी
ही होगी। मुठी में मैं ने मट्टी ही लाई।
मट्टी ही मट्टी इकट्ठा की। मैं आपको
अपने मन के पालने में झुलाओंगी।

जब तुम [illegible] अपने वश

में करोगे। तब तो तुम त्रिभवन को देख सकोगे। नहीं तो वह ठीक एक पेड़ की भांति विकास पाता है। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

ससंार का जाल छिपा हुआ है। इसने कितनों को अपनी लपेट में लिया है। जिसकी समझ में यह आगया। वह इससे निकल आया। उसने इसे फाड़ डाला। मैं तो आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

कुम्हार ही को देखो। कोई मोटा है और कोई पतला। कोई उनमें से भी अलग थलग है। कोई माटी या पीली माटी नीचे ही लाल है। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

हे मूढ़! हे मूर्ख तू विचार कर। मैं ने इस संसार में जन्म लिया। मैं किस आशा तथा इच्छा से यहाँ आगई

थी। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।।वह तो आपके पास ही है। तू दूर जाने की चिन्ता न कर। आपको उसे गली गली, बाज़ार बाजार ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं। धीरे धीरे सीमित रूप से चलोगे तो पार हो जाओगे। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

तुम भक्ति भावना तथा श्रद्धा की नाविका ले लो।जो विचार तथा प्रेम की हो। खींचने वाला फटे को भी खींच कर चला सकता है। मैं आपको मन के पालने में झुलाओंगा।

वह तो खींचने वाला ही होगा। वह स्वयं पार करवाने वाला था तथा पार लगाने वाला होगा। तभी तू भी किसी मंज़िल पर पहुँच सकते हो। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

गुरु तो आँख की पुतली हैं। आंखों की ज्योति हैं। उसके पास प्रकाश ही प्रकाश है। अतः तुम इसे ही पकड़ ले। यह दुखी या दुविधा में कभी नहीं रहेगा। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

जो इस रहस्य को पाएगा। पहले वह जिसके भेद को वह समझेगा। जिसकी वह पालना करेगा। वह तो बीच सागर में पहुंचेगा। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

यदि उस में से बाहर निकला होगा। सागर में से वह चला होगा। यह वहाँ पर मलीन हुआ होगा। अशुद्ध हुआ होगा। मैं आपको अपने पालने में झुलाओंगा।

आशा, इच्छा, प्रकाश तथा

सुप्रकाश उसी के पास परम प्रकाश भी है। नक्श को नक़ाश (चित्रकार) ही पहचान सकता है। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

फिर उसने आपको ही वश किया और अपने आप में ही उसे खोजा। पहले अपने शरीर को ही उसने सारे दुःख दिए। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

यह संसार बड़ा विशाल है, विस्त्रित है। मोह रूपी खड़ तथा खाई को पार करना दुर्लभ है। ऐसे में तू ही मुझे पार लगाना। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

सागर में बीज बोना गुरु के ज्ञान से उसी के प्रदर्शन से उसमें फल लगेगा। इसकी देखरेख आपको ही

तन मन से तथा श्रद्धा और लग्न से करनी होगी। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

तुम क्योंकर अपने पथ से भटक रहे हो। यह संसार का मोह ही आपमें इच्छा तथा उत्सुकता उत्पन्न करता है। कुछ भी आपके पास है नहीं। तिसपर भी तू यह दिखावा क्यों करता है। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

कितनों को इस मोह ने मोह लिया है। चोरी चोरी यह मोह लेने का काम करता रहता है। अज्ञान ही के कारण पछाड़ जाते हैं। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

जिसने खोजते खोजते कुछ भी पाया। उसने वह अपने आपको जीते

जी मार कर ही पाया। विचार करने पर ही वह इसके सार को प्राप्त हुए। मैं आपको अपने मनके पालने में झुला लूँगा।

ज्ञान के प्रकाश को छिपा लिया। अन्तर के अज्ञान के पीछे पड़ गए। अपने यौवन को बुढ़ापे में बदल लिया। मैं आपको अपने मन के पालने में झुला लूंगा।

गुरु पद्द, गुरु के स्वर्णतथा अमृतवचन ही सार है। परन्तु इस पर विचार विमर्श की अत्यावश्यकता है। विचार विमर्श द्वारा ही इस से पार हो जाओ। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलालूँगा।

जो भी प्राणी इस पथ पर चल पड़ा। जो अहम भाव तथा

तथा अहंकार को अपने वश करे। उसके रास्तों में फूल ही फूल उत्पन्न होंगे। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

गुरु का होना अत्यन्त अनिवार्य है। उसके विना कुछ सम्भव ही नहीं। सूर्य ही अन्धकार को दूर करने वाला होता है। वह तो रोम रोम तथा कण कण में व्यापक है। समाया हुआ है। वह प्रत्यक्ष है। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

अपने पति देव की सेवा करो ताकि उसके हृदय में यह बात रहे। उसको आपके प्रति सहानुभूति उत्पन्न होगी। वह दूध के साथ मिश्री भी मिलाएगा। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

दूध तो अपने आपका मंथन किया हुआ है। पंड़ित (विद्धवान) तो अपने देह को घाव पर लगाएगा। खूब परिश्रम करेगा। अन्त पर तो वह इसके फलस्वरूप अमृतपान ही करेगा ऐसा तो यथार्थ है। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

पहले अन्दर ही अन्दर इसे सहन कर ले। छिपाकर तथा छिप कर पार मत हो जाना। आँखों में झांककर रहस्य को प्राप्त होना। मैं आपको अपने मन के पालने में ही झुला लूंगा।

भंवरा उछलता है। छिपकर शांति से इधर उधर उछलता है। एक ड़ाली से दूसरी ड़ाली पर छलांगें मारता है। यह तो सभाव का ही चञ्चल है।

अतः प्राणों को अपने वश करले। तभीतो कुछ प्राप्त करने की सम्भावना है। मैं आपको अपने मनके पालने में झुलाओं-गा।

यह काया क्या है? जैसे माटी का ढ़ेर। यह स्तम्भ भी तो माटी ही के हैं। अन्त में इस शरीर का नाश ही होना है। क्योंकि यह तो नश्वर है। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

कोई शुभ कर्म करने से ही पार पाने की आशा बन्ध जाएगी। इसलिए हे प्राणी तू दुर्विचार त्याग कर शुभ कर्म कर। इसी से आपका जन्म सफल होगा। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।

शिव शंकर तो प्रत्येक बार

में समाया हुआ है। वह जल तथा थल में उपस्थित है। उसको केवल वही जानता है जिसको उसकी सच्ची लगन हो। उसका ध्यान हो। वही प्राण रूपी पनेरी की सिंचाई करेगा। मैं आपको अपने मन के पालने में झुलाओंगा।



बस एक विनती :-

इस पुस्तक के हिन्दी अनुवाद के भाग में स्वामी जी के उपनाम "शंकर" तथा स्वामी जी के गुरु महाराज "ज़नार्दन" को हरजगह "   " में रखा गया है ताकि अर्थ स्पष्ट हो।

किताब मिलने का पता

★- श्री लक्ष्मी नाथ रैणा -B/8
पम्पोश ऐनक्लेव - नई दिल्ली।

★- श्री ओ० एन० मल्ला
312- अम्भिका विहार - नई दिल्ली-110041

★- श्री जिया लाल रैणा } - 7/M
(या) श्री सोम नाथ रैणा }
कशमीरी अपार्टमेन्ट, नई दिल्ली
1100034.

★- श्री हीरा लाल कौल — मकान नं० 35/1
त्रिकूटा नगर जम्मू तवी।

★- श्री अमर नाथ रैणा
सेक्रीट्री भैरवनाथ ट्रस्ट, छत्ताबल,
श्रीनगर कशमीर।

★- श्री नन्द लाल रैणा.-
मनेजर गाँधी आश्रम,
श्रीनगर।

★- एम० के० रैणा (सम्पादक)
1149- सेक्टर 4 पंचकोला, हरियाणा।

★- श्री मक्खन लाल कौल
9- मोटर गेराजिज़ - जम्मू

★- डा० अनील कुमार रैणा }
डा० नीना रैणा } -1149
सेकटर - 4 · पंचकोला
हरियाना ।

★- प्रो० अशोक रैणा - 617-A
लोवर लक्ष्मीनगर
सरवाल - जम्मू ।

★- श्री एच० एन० खरू
990/17 फ़रीदाबाद ।

★- श्री विजय कौल -
सूपरइन्टेन्डेन्ट सेन्ट्रल एकसाईज़
साम्बा - जम्मू ।